वर्ष-1 , अंक-5 | बेंगलुरु, रविवार, 23 अगस्त 2026 | RNI NO:KNHIN/26/A5540 | Contact:news@bhaarataarth.com | पृष्ठ – 4 ,मूल्य – 5 रुपए

दैनिक समाचार पत्र

भारतार्थ खबर

ख़बर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

Gen Z पर BJP का फोकस, युवाओं से जुड़ने को नई टीम

भारतार्थ खबर | Bhaarataarth.com

नई दिल्ली 22 अगस्त 2026। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने देश के युवा और जेन-जी मतदाताओं के बीच अपनी पहुंच मजबूत करने के लिए विशेष टीम गठित की है। पार्टी की नई रणनीति का केंद्र युवाओं की आकांक्षाओं, चिंताओं और अपेक्षाओं को समझना तथा उनके साथ प्रत्यक्ष और डिजिटल माध्यमों से संवाद बढ़ाना बताया गया है। इन नेताओं को मिली जिम्मेदारी युवा मतदाताओं तक पहुंच बनाने के लिए गठित टीम में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन, राष्ट्रीय महामंत्री स्मृति ईरानी, पार्टी के वरिष्ठ नेता विनोद तावड़े, गुजरात सरकार के मंत्री हर्ष सांघवी और छत्तीसगढ़ सरकार के मंत्री ओ.पी. चौधरी को शामिल किए जाने की जानकारी है।

पार्टी की योजना के तहत यह टीम नई पीढ़ी के साथ संवाद के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म के साथ-साथ जमीनी स्तर पर भी गतिविधियों को बढ़ावा देगी। युवाओं की बात सीधे सुनने पर जोर भाजपा की इस पहल का प्रमुख उद्देश्य युवाओं की बदलती प्राथमिकताओं को समझना है। रोजगार, शिक्षा, उद्यमिता, तकनीक, डिजिटल अवसर, कौशल विकास और सामाजिक भागीदारी जैसे विषय युवा वर्ग के बीच महत्वपूर्ण हैं। नई टीम के माध्यम से पार्टी युवाओं के साथ संवाद बढ़ाकर उनकी समस्याओं और सुझावों को समझने का प्रयास करेगी। इसके लिए सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल माध्यमों के अलावा प्रत्यक्ष संपर्क कार्यक्रमों पर भी जोर दिए जाने की बात सामने आई है। 14 वर्ष से अधिक आयु के युवाओं पर नजर

पार्टी की रणनीति में 14 वर्ष से अधिक आयु के युवा वर्ग और नई पीढ़ी तक पहुंच बनाने पर विशेष ध्यान दिए जाने की जानकारी है। हालांकि, 18 वर्ष से कम आयु के लोग भारत में सामान्य चुनावों में मतदान नहीं कर सकते, इसलिए इस आयु वर्ग तक पहुंच का उद्देश्य तत्काल चुनावी मतदान से अधिक भविष्य के सामाजिक और राजनीतिक संवाद से जुड़ा माना जा सकता है। डिजिटल दौर में बदल रही राजनीतिक रणनीति सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने राजनीतिक संवाद का स्वरूप तेजी से बदला है। नई पीढ़ी पारंपरिक राजनीतिक सभाओं के साथ-साथ इंस्टाग्राम, यूट्यूब, शॉर्ट वीडियो और अन्य डिजिटल माध्यमों से राजनीतिक जानकारी प्राप्त करती है। ऐसे में भाजपा की नई पहल को युवा वर्ग के साथ संवाद की शैली बदलने और नई पीढ़ी की भाषा तथा मुद्दों को समझने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है। हालांकि, इस रणनीति का वास्तविक प्रभाव आने वाले समय में पार्टी की जमीनी गतिविधियों और युवाओं की प्रतिक्रिया से ही स्पष्ट होगा।

RSS पर अमेरिकी रिपोर्ट से भारत नाराज, MEA ने जताई आपत्ति

भारतार्थ खबर | Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 22 अगस्त 2026। अमेरिका में आरएसएस पर प्रतिबंध लगाने की सिफारिश से जुड़ी रिपोर्ट को लेकर भारत सरकार ने कड़ा रुख अपनाया है। विदेश मंत्रालय ने अमेरिकी धार्मिक स्वतंत्रता आयोग USCIRF की टिप्पणियों को पक्षपाती और भड़काऊ बताते हुए उसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाए हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि USCIRF भारत के संबंध में अपमानजनक और भड़काऊ टिप्पणियां कर रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे संगठनों से दूरी बनाए रखना उचित है, क्योंकि उनका अपना एजेंडा होता है और उनकी विश्वसनीयता को लेकर गंभीर सवाल हैं।

जायसवाल ने कहा कि भारत को उम्मीद नहीं है कि USCIRF देश के बहुलवादी ढांचे की वास्तविकता और विभिन्न समुदायों के बीच लंबे समय से चले आ रहे सह-अस्तित्व को सही परिप्रेक्ष्य में समझेगा। मोहन भागवत की अमेरिका यात्रा का विरोध USCIRF के अध्यक्ष आसिफ महमूद ने आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत की प्रस्तावित अमेरिका यात्रा का विरोध किया है। उन्होंने अमेरिकी सरकार से आरएसएस पर प्रतिबंध लगाने की अपील भी की है। भागवत के 29 अगस्त को न्यूयॉर्क जाने की बात कही गई है।

USCIRF ने अमेरिकी प्रशासन से आरएसएस के नेताओं को राजनयिक शिष्टाचार नहीं देने और संगठन के कुछ उपसमूहों पर धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ हमलों से जुड़े आरोपों की जांच करने की मांग की है। आयोग ने धार्मिक स्वतंत्रता के कथित उल्लंघनों के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों पर लक्षित प्रतिबंध लगाने की भी सिफारिश की है। पहले भी भारत पर टिप्पणी कर चुका है USCIRF की मार्च में जारी वार्षिक रिपोर्ट में भी भारत में धार्मिक स्वतंत्रता की स्थिति को लेकर चिंता जताई गई थी। रिपोर्ट में आरएसएस और कुछ अन्य संस्थाओं एवं व्यक्तियों के खिलाफ लक्षित प्रतिबंधों की सिफारिश की गई थी। आयोग ने भारत को विशेष चिंता का देश घोषित करने की भी सिफारिश की थी।

USCIRF अमेरिका की एक स्वतंत्र और द्विदलीय संघीय सरकारी एजेंसी है, जो धार्मिक स्वतंत्रता से जुड़े मुद्दों पर अमेरिकी राष्ट्रपति, विदेश मंत्री और कांग्रेस को नीतिगत सिफारिशें देती है। पप्पलप्रीत सिंह को मिला विधानसभा टिकट इसी बीच पंजाब की राजनीति में भी गतिविधियां तेज हुई हैं। अमृतपाल सिंह के प्रमुख सहयोगी और मीडिया सलाहकार पप्पलप्रीत सिंह को अकाली दल (वारिस पंजाब दे) ने मजीठा विधानसभा क्षेत्र से अपना उम्मीदवार घोषित किया है। इससे पहले संगठन ने 1984 में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के मामले में फांसी दिए गए केहर सिंह के बेटे सतवंत सिंह को बस्सी पठाना सीट से प्रत्याशी बनाया था।

घना कोहरा बना काल! अलास्का में चार्टर्ड प्लेन क्रैश, 8 की मौत

भारतार्थ खबर | Bhaarataarth.com

अलास्का, 22 अगस्त 2026। अमेरिका के अलास्का में घने कोहरे और बेहद कम दृश्यता के बीच एक चार्टर्ड विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में विमान में सवार दो पायलटों समेत सभी आठ लोगों की मौत हो गई। दुर्घटना 20 अगस्त को एंकरेज से करीब 450 मील (725 किलोमीटर) पश्चिम स्थित केप न्यूएनहैम लॉन्ग रेंज रडार साइट एयरपोर्ट के पास हुई। अमेरिकी सैन्य अधिकारियों और राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड (NTSB) के अनुसार विमान लैंडिंग के दूसरे प्रयास के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हुआ। विमान में दो पायलट और छह यात्री सवार थे। मृतकों में अमेरिकी सेना के यूएस आर्मी कॉर्प्स ऑफ इंजीनियर्स के दो कर्मचारी भी शामिल थे। शेष यात्रियों में ठेकेदार कर्मचारी शामिल थे। विमान एंकरेज से केप न्यूएनहैम की ओर जा रहा था और इसका संचालन एंकरेज स्थित सिक्योरिटी एविएशन कर रही थी।

दूसरी बार लैंडिंग की कोशिश में हुआ हादसा NTSB के अनुसार विमान ने पहले लैंडिंग का प्रयास किया था, लेकिन सफल नहीं हो सका। इसके बाद पायलट दूसरी बार लैंडिंग की कोशिश कर रहे थे। खराब मौसम और घने कोहरे के कारण दृश्यता तेजी से घट रही थी। विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से कुछ समय पहले रडार से उसका संपर्क टूट गया। केप न्यूएनहैम का हवाई अड्डा पहाड़ी इलाके में बनी बजरी वाली रनवे पर स्थित है। यहां खराब मौसम में पायलटों को GPS और अन्य इंस्ट्रूमेंट्स पर निर्भर रहना पड़ता है। मौसम संबंधी आंकड़ों के मुताबिक दुर्घटना के आसपास दृश्यता में अचानक भारी गिरावट आई और यह एक-चौथाई मील से भी कम रह गई थी।

सैन्य रडार नेटवर्क का अहम केंद्र केप न्यूएनहैम रडार साइट अलास्का के दूर-दराज के रडार स्टेशनों के नेटवर्क का हिस्सा है, जो अलास्का के हवाई क्षेत्र और उसकी सीमाओं के आसपास उड़ानों पर नजर रखने में मदद करता है। इस साइट का प्रबंधन पैसिफिक एयर फोर्सेस रीजनल सपोर्ट सेंटर करता है। NTSB और FAA ने शुरू की जांच हादसे की जांच NTSB और फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन (FAA) कर रहे हैं। NTSB की टीम दुर्घटनास्थल पर पहुंचकर मलबे, मौसम की स्थिति, उड़ान संबंधी आंकड़ों, एयर ट्रैफिक कंट्रोल संचार, विमान के रखरखाव रिकॉर्ड और पायलटों के अनुभव समेत कई पहलुओं की जांच करेगी। अलास्कन कमांड के कमांडर अमेरिकी वायुसेना के लेफ्टिनेंट जनरल रॉबर्ट डेविस ने हादसे पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए मृतकों को कठिन परिस्थितियों में महत्वपूर्ण मिशन पर कार्यरत समर्पित पेशेवर बताया। उन्होंने पीड़ित परिवारों और सहयोगियों के प्रति संवेदना जताई।

1 सितंबर से इंटरनेशनल यात्रियों को बड़ी राहत, नहीं चाहिए होगा फिजिकल बोर्डिंग पास

भारतार्थ खबर | Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 22 अगस्त 2026। अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए 1 सितंबर 2026 से एयरपोर्ट पर एक बड़ा डिजिटल बदलाव लागू होने जा रहा है। देश के सभी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर इमिग्रेशन क्लियरेंस के दौरान यात्रियों को अब फिजिकल बोर्डिंग पास दिखाने या उस पर इमिग्रेशन की मुहर लगवाने की जरूरत नहीं होगी। यात्री अपने मोबाइल फोन में मौजूद ई-बोर्डिंग पास के जरिए इमिग्रेशन प्रक्रिया पूरी कर सकेंगे। मोबाइल में ई-बोर्डिंग पास होगा पर्याप्त नई व्यवस्था के तहत अंतरराष्ट्रीय यात्रा करने वाले यात्री अपने मोबाइल में सेव ई-बोर्डिंग पास इमिग्रेशन काउंटर पर दिखाकर क्लियरेंस करा सकेंगे। इससे यात्रियों को बोर्डिंग पास की प्रिंटेड कॉपी संभालकर रखने और उस पर इमिग्रेशन की मुहर लगवाने की परेशानी से राहत मिलेगी।

इस डिजिटल व्यवस्था का उद्देश्य इमिग्रेशन प्रक्रिया को अधिक तेज, सरल और सुविधाजनक बनाना है। इससे एयरपोर्ट पर कागजी प्रक्रिया कम होने के साथ यात्रियों के समय की भी बचत होने की उम्मीद है। प्रिंटेड बोर्डिंग पास लेकर जाने वालों को भी राहत हालांकि, जिन यात्रियों के पास फिजिकल बोर्डिंग पास होगा, उन्हें यात्रा के दौरान किसी तरह की परेशानी नहीं होगी। वे अपनी प्रिंटेड कॉपी के साथ यात्रा कर सकेंगे। नई व्यवस्था लागू होने के बाद अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के फिजिकल बोर्डिंग पास पर इमिग्रेशन की मुहर नहीं लगाई जाएगी। एयरपोर्ट और CISF को दी गई जानकारी

नई डिजिटल व्यवस्था को लेकर ब्यूरो ऑफ इमिग्रेशन ने एयरपोर्ट ऑपरेटरों, संबंधित हितधारकों और CISF को आवश्यक जानकारी दे दी है। संबंधित एजेंसियों को नई व्यवस्था के अनुरूप जरूरी तकनीकी एवं परिचालन तैयारियां पूरी करने के निर्देश दिए गए हैं। 1 सितंबर से देशभर में लागू होगी व्यवस्था नई व्यवस्था 1 सितंबर 2026 से देश के सभी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर लागू होगी। इसके बाद अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए मोबाइल में मौजूद ई-बोर्डिंग पास इमिग्रेशन क्लियरेंस के लिए पर्याप्त होगा। हालांकि, यात्रियों को एयरलाइन के अन्य निदेशों और यात्रा दस्तावेजों की आवश्यकताओं का पालन करना होगा। डिजिटल इमिग्रेशन की दिशा में यह बदलाव यात्रियों के लिए कागजी औपचारिकताओं को कम करने और एयरपोर्ट प्रक्रिया को अधिक सहज बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

आर्थिक वृद्धि के लिए न्याय-नॉमिक्स जरूरी, लगातार फैसलों में भरोसा अहम: सीजेआई

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने शनिवार को कहा कि देशों से जिस बड़े पैमाने पर आर्थिक वृद्धि बनाए रखने की उम्मीद की जाती है, वह केवल भौगोलिक स्थिति या संसाधनों के बूते संभव नहीं है तथा लगातार भरोसेमंद न्यायिक फैसलों के जरिए सभी को समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए न्याय-नॉमिक्स (न्याय के अर्थशास्त्र) की जरूरत है। प्रधान न्यायाधीश ने यहां 11वें ब्रिक्स प्लस लीगल फोरम को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थाएं आर्थिक वृद्धि के इर्द-गिर्द खड़ा किया गया कोई अस्थायी ढांचा नहीं, बल्कि उसकी बुनियाद हैं। इस मंच का विषय आर्थिक मजबूती, नवोन्मेष और स्थिरता के लिए कानून के शासन की रूपरेखा एवं संस्थागत क्षमता निर्माण था। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि भारत की प्रगति में मजबूत संस्थाओं की अहम भूमिका है और इनमें न्यायपालिका की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है तथा यही बात ब्रिक्स प्लस देशों पर भी लागू होती है। उन्होंने कहा, हमारे देशों से जिस बड़े पैमाने पर आर्थिक वृद्धि बनाए रखने की उम्मीद है,

वह केवल अनुकूल भौगोलिक स्थिति या संसाधनों के सहारे संभव नहीं है। इसके लिए ऐसी मजबूत संस्थाओं का होना जरूरी है, जिन पर भरोसा किया जा सके। शायद आंकड़े इस बात को शब्दों से बेहतर ढंग से स्पष्ट कर सकते हैं। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, न्याय-नॉमिक्स यानी सरल शब्दों में न्याय का अर्थशास्त्र। न्यायिक फैसलों में निरंतरता और न्याय प्रक्रिया पर भरोसा लेन-देन की लागत कम करता है। इससे बाजार में सभी को बराबरी का अवसर मिलता है और आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा मिलता है। उन्होंने कहा कि भारत समेत ब्रिक्स प्लस की किसी भी अर्थव्यवस्था ने केवल प्राकृतिक संसाधनों के बल पर प्रगति नहीं की है।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और सुरक्षा के लिए निवारक स्वास्थ्य सेवा जरूरी : राजनाथ सिंह

नोएडा (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को निवारक स्वास्थ्य सेवा को स्वास्थ्य व्यवस्था का भविष्य का मॉडल बताया और कहा कि रोग के बदलते स्वरूप, इलाज खर्च के बढ़ने और भारत की बढ़ती बुजुर्ग आबादी को देखते हुए स्वास्थ्य क्षेत्र का ध्यान समय रहते बीमारी की पहचान और उसकी रोकथाम पर केंद्रित करना होगा। नोएडा में महाजन इमेजिंग एंड लैब्स की एक इकाई के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर, गुर्दे की विफलता और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं जैसी गैर-संचारी बीमारियां तेजी से बड़ी स्वास्थ्य चुनौतियां बन रही

हैं। उन्होंने कहा, ये बीमारियां एक दिन में विकसित नहीं होतीं। ये वर्षों के दौरान धीरे-धीरे शरीर में बढ़ती हैं। बढ़ा हुआ रक्त शर्करा स्तर, उच्च कोलेस्ट्रॉल, फैटी लिवर और सीमा के करीब रक्तचाप जैसे संकेत खतरे की घंटी हैं। स्वास्थ्य सेवा का भविष्य इन संकेतों की समय रहते पहचान में है। रक्षा मंत्री ने कहा कि निवारक स्वास्थ्य सेवा आर्थिक रूप से भी लाभदायक है, क्योंकि गंभीर अवस्था में पहुंच चुकी बीमारियों के इलाज में लाखों रुपये खर्च हो सकते हैं, जबकि वार्षिक स्वास्थ्य जांच, जीवनशैली संबंधी सलाह, शुरूआती जांच और सामान्य दवाओं पर कुछ सौ या हजारों रुपये ही खर्च होते हैं।

ओडिशा-छत्तीसगढ़ में अगले तीन दिन मूसलाधार बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के कई हिस्सों में मानसून एक बार फिर सक्रिय होने जा रहा है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार, अगले 24 घंटों के दौरान पश्चिम बंगाल-बांग्लादेश तट के पास उत्तरी बंगाल की खाड़ी में कम दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है। इसके प्रभाव से ओडिशा और छत्तीसगढ़ में अगले तीन दिनों तक कई स्थानों पर भारी से बहुत भारी बारिश हो सकती है। वहीं पूर्वी मध्य प्रदेश और पूर्वी उत्तर प्रदेश में भी तेज बारिश को लेकर चेतावनी जारी की गई है। मौसम प्रणाली के सक्रिय होने के बाद मध्य और पूर्वी भारत में बारिश की गतिविधियां तेज होने की संभावना है। ओडिशा और छत्तीसगढ़ के कई इलाकों में मूसलाधार बारिश हो सकती है। दूसरी ओर, पूर्वी मध्य प्रदेश में पहले से बने कम दबाव के क्षेत्र का असर पूर्वी उत्तर प्रदेश और आसपास के क्षेत्रों पर भी पड़ने की संभावना जताई गई है। मौसम विभाग के अनुसार 22 से 26 अगस्त के बीच पूर्वी और पश्चिमी मध्य प्रदेश में कई स्थानों पर तेज बारिश हो सकती है। विदर्भ में 22 से 25 अगस्त तक और छत्तीसगढ़ में 22 से 28 अगस्त तक व्यापक बारिश का अनुमान है।

जेन-जी को साधने की भाजपा की तैयारी, नितिन नवीन ने स्मृति ईरानी समेत नेताओं को दी बड़ी जिम्मेदारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा अब देश के युवा वर्ग और खासकर जेन-जी के बीच अपनी पहुंच मजबूत करने की तैयारी में जुट गई है। पार्टी ने युवाओं की बदलती आकांक्षाओं, रोजगार, शिक्षा, तकनीक और स्टार्टअप जैसे मुद्दों को समझने के लिए एक विशेष आउटरीच कार्यक्रम तैयार किया है। इसके लिए भाजपा ने एक उच्चस्तरीय केंद्रीय टीम का गठन किया है, जिसमें संगठन के अनुभवी नेताओं के साथ युवा चेहरे भी शामिल किए गए हैं। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, इस विशेष अभियान की जिम्मेदारी भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के नेतृत्व वाली टीम को दी गई है। टीम में राष्ट्रीय महासचिव स्मृति ईरानी और विनोद तावड़े भी शामिल हैं। इनके अलावा गुजरात सरकार के मंत्री हर्ष सांघवी और छत्तीसगढ़ सरकार के मंत्री ओपी चौधरी को भी टीम का हिस्सा बनाया गया है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य युवाओं और पहली बार मतदान करने वाले लोगों के साथ सीधा संवाद स्थापित करना है। भाजपा युवा वर्ग की प्राथमिकताओं और चिंताओं को समझने के साथ-साथ उन्हें पार्टी के शीर्ष नेतृत्व तक पहुंचाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने की तैयारी कर रही है।

बिहार: लोकभवन जाने का प्रयास कर रहे पीएचडी डिग्रीधारकों को पुलिस ने आर ब्लॉक पर रोका, आमरण अनशन जारी

पटना (एजेंसी)। उच्च शिक्षा, युवाओं के रोजगार और शोधार्थियों के अकादमिक भविष्य से जुड़े मुद्दों को लेकर पिछले 18 दिनों से आमरण अनशन कर रहे पीएचडी डिग्रीधारकों और शोधार्थियों ने शनिवार को मार्च करते हुए लोकभवन जाने का प्रयास किया। ऑल पीएचडी होल्डर्स एंड रिसर्च स्कॉलर्स एसोसिएशन ऑफ बिहार के बैनर तले बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी तिरंगा लेकर गर्दनीबाग से निकले और वीर कुंवर सिंह पार्क की ओर बढ़ते हुए लोकभवन जाने का प्रयास किया। प्रदर्शनकारियों के मार्च को देखते हुए पुलिस पहले से ही आर-ब्लॉक के पास मुस्तैद थी। पुलिस ने बैरिकेडिंग कर प्रदर्शनकारियों को आगे बढ़ने से रोक दिया। इसके बाद प्रदर्शनकारी बैरिकेडिंग पर चढ़कर अपनी मांगों के समर्थन में नारेबाजी करने लगे। स्थिति को नियंत्रित रखने के लिए पुलिस ने वाटर कैनन समेत सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए थे। प्रदर्शनकारियों के सड़क पर डटे रहने के कारण आर-ब्लॉक के आसपास कई घंटों तक यातायात प्रभावित रहा। हालांकि, पुलिस के अनुसार दक्षिणी फ्लैंक से वाहनों की आवाजाही जारी रही। पटना के एसपी लॉ एंड ऑर्डर कृष्ण मुरारी प्रसाद ने बताया कि प्रदर्शन मुख्य रूप से अतिथि शिक्षकों, पीएचडी धारकों और पीएचडी के अंतिम चरण में पहुंच चुके शोधार्थियों की ओर से किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आंदोलन का नेतृत्व कुमुद पटेल कर रहे हैं, जो पिछले 17 दिनों से आमरण अनशन पर हैं।

संपादकीय

मिठास की खटास

हाल के दिनों में बाजारों में चीनी की कीमतों में अप्रत्याशित उछाल देखा गया है। वहीं चीनी की कालाबाजारी की आशंका के मद्देनजर सरकार ने इसकी बिक्री का नियमन भी किया है। साथ ही सरकार ने बिना टैक्स दस लाख टन कच्ची चीनी के आयात की इजाजत देने का भी फैसला किया है। लेकिन सरकार का यह फैसला शायद ही बढ़ती कीमतों का जवाब हो। निस्संदेह, यह परिदृश्य सरकार के लिये उसकी महत्वाकांक्षी इथेनॉल नीति की असलियत को समझने का एक अवसर भी है। पूरे देश में इथेनॉल मिश्रित ई-20 पेट्रोल की बिक्री व्यवस्था लागू करने का जश्न मनाने के दो साल से भी कम समय में सरकार अब दो परस्पर विरोधी जरूरतों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कर रही है। पहला, देश की विदेशी मुद्रा बचाने के लिये कच्चे तेल के आयात को कम करना और दूसरा उपभोक्ताओं के लिये सस्ती चीनी उपलब्ध कराना। निस्संदेह,यह घटनाक्रम एक नीतिगत दुविधा को तो दर्शाता है कि जब एक ही फसल का इस्तेमाल खाद्य पदार्थ और ईंधन, दोनों के लिये किया जाता है, तो किसी एक लक्ष्य को दूसरे से अलग रखकर पूरा नहीं किया जा सकता है। निस्संदेह, ऐसे वक्त में जब खाड़ी संकट के चलते पूरी दुनिया में पेट्रोलियम पदार्थों का संकट व्याप्त रहा, इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल ने देश के नागरिकों व सरकार को बड़ी राहत दी है। इसमें दो राय नहीं कि निर्धारित समय सीमा से पहले ही बीस फीसदी इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल का लक्ष्य हासिल करके, भारत ने आयातित कच्चे तेल पर अपनी निर्भरता को कुछ कम जरूर किया है। वहीं दूसरी ओर सरकार की इस अभिनव पहल से जहां एक ओर चीनी मिलों को सहारा मिला है,वहीं गन्ना किसानों के लिये कमाई का एक अतिरिक्त जरिया भी बना है। निश्चित रूप से इस देश के लिये यह एक उपलब्धि ही कही जा सकती है जो अपनी जरूरतों के लिये 85 फीसदी कच्चे तेल का आयात करता रहा है। वह भी अपने देश में उपलब्ध वैकल्पिक संसाधनों के जरिये।

इसके बावजूद राजग सरकार की इस रचनात्मक पहल की कुछ बुनियादी खामियां भी हमारे सामने उजागर हुई हैं। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि गन्ना भारत में सबसे ज्यादा पानी की खपत करने वाली फसलों में से एक है। वहीं दूसरी ओर इथेनॉल के उत्पादन के लिये गन्ने का इस्तेमाल ऐसे समय में शुरू हुआ है जब देश के प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्यों में शुमार महाराष्ट्र और कर्नाटक में पैदावार खराब मौसम और गन्ने की फसल पर लगी बीमारियों के चलते कमजोर रही है। यह भी एक वजह है कि गन्ना आपूर्ति में आई कमी के चलते भी हाल के दिनों में चीनी की कीमतों में तेजी देखी गई है। जिसके चलते सरकार को चीनी का निर्यात रोकना पड़ा है। इतना ही नहीं, सरकार को आसन्न त्योहारी मौसम को देखते हुए अब कच्ची चीनी के आयात को अनुमति देनी पड़ी है। निस्संदेह, इन परिस्थितियों के मद्देनजर यह नहीं कहा जा सकता है कि देश में इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल का प्रयोग विफल हो गया है। बल्कि यह समझने की जरूरत है कि देश की कृषि संबंधी वास्तविकताओं और दुनिया की सबसे बड़ी आबादी की खाद्य जरूरतों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। आज जरूरत इस बात की है कि देश में एक लचीली जैव ईंधन रणनीति को तार्किक बनाया जाए। जिसे फसलों की स्थितियों और घरेलू खाद्य जरूरतों के अनुरूप ढाला जा सके। निस्संदेह, फसलों के अवशेष और कृषि अपशिष्ट से निर्मित होने वाले इथेनॉल में अधिक निवेश करने से ही गन्ने पर निर्भरता को कम किया जा सकता है। इसके साथ ही जलवायु लक्ष्यों को भी बढ़ावा दिया जा सकेगा। भारत द्वारा ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत के लक्ष्य के रूप में कामयाबी एक सराहनीय उपलब्धि कही जा सकती है। निस्संदेह यह उपलब्धि खाद्य मुद्रास्फीति या जल के अंधाधुंध दोहन की कीमत पर नहीं हासिल की जा सकती। सही मायने में सबसे अच्छी नीति वही मानी जाएगी, जो ईंधन के टैंक और रसोई के भंडार पर्याप्त मात्रा में भरा रख सके।

चुनमुनियाँ

लेखक – लालबहादुर चौरसिया लाल, आजमगढ़

रात के करीब आठ बजे थे। घर के बाहर से आती नाच की आवाज और भीतर बर्तनों की खटर-पटर से अचानक मेरी नींद खुल गई। दूर से ढोल-मजीरे की आवाज कानों में साफ सुनाई दे रही थी। घर में लगभग सभी लोग जाग रहे थे।

मैंने बरामदे में देखा तो चाचा जी कपड़े पहनकर कहीं जाने की तैयारी में थे। बाहर दरवाजे पर उनका एक मित्र भी उनका इंतजार कर रहा था।

मैंने पूछा– चाचा जी, कहीं जा रहे हो क्या?

वे बनावटी गुस्से में बोले–

नहीं तो!

मैंने फिर कहा–

चाचा जी, आप क्यों झूठ बोल रहे हो? मैं जानता हूं, आप नाच देखने जा रहे हो।

वे इस बार थोड़ा गरजे–

जा तो रहा हूं, क्यों? क्या बात है?

मैंने बालहठ करते हुए कहा–

मैं भी आपके साथ नाच देखने चलूंगा।

चाचा जी ने आंखें तरेरते हुए कहा–

नहीं, बिल्कुल नहीं। सो जा, नहीं तो कान के नीचे दो चांटे जड़ दूंगा।

इतना कहकर चाचा जी अपने मित्र के साथ चले गए।

उनका यह व्यवहार मेरे बालमन को भीतर तक चोट कर गया। मेरी आंखें छलछला उठीं। कंठ भी शांत नहीं रह सका। मैं बिस्तर पर ही जोर-जोर से रोने लगा।

मेरा रोना सुनकर दादा जी आए। उन्होंने मुझे पुचकारते हुए पूछा–

क्या बात है बेटा गोलू? अभी सोए नहीं? क्यों रो रहे हो?

लेकिन मेरे ऊपर उनकी बातों का कोई असर नहीं हुआ। मेरे कानों में पड़ रही ढोल की थाप किसी मृगमरीचिका की तरह मुझे अपनी ओर खींच रही थी। ढोल जितनी तेज गति से बज रहा था, मेरा कंठ भी उतनी ही तीव्रता से रुलाई की ताल मिला रहा था।

दादा जी ने फिर पूछा–

बेटा गोलू, क्यों रो रहे हो? क्या बात है? पेट तो नहीं दर्द कर रहा?

मैं और जोर-जोर से रोने लगा।

मेरा बालरुदन सुनकर दादी जी भी आ गईं। उन्होंने मुझे दादा जी की गोद से अपनी गोद में बैठाया और स्नेह से पूछा–

अरे मेरे राजा बेटा को क्या हो गया? बेटा क्यों रो रहा है?ह्व

दादी जी के मक्खन जैसे मीठे शब्दों ने मेरे अंतर्मन को और भावुक कर दिया। मैं उनसे लिपटकर सिसकने लगा और अपने रोने का कारण बता दिया।

मेरी बात सुनते ही दादी ने पिताजी को आवाज लगाई।

पिताजी आए।

दादी ने उन्हें आदेश दे दिया कि मुझे नाच दिखाकर लाया जाए।

हालांकि हमारे पिताजी चाचा जी की तरह नाच देखने के शौकीन नहीं थे। उन्हें नाच-गाना बिल्कुल पसंद नहीं था। लेकिन दादी की बात मानने के अलावा उनके पास कोई रास्ता भी नहीं था।

वे अनमने मन से मुझे लेकर उस स्थान पर पहुंच गए, जहां नाच हो रही थी।

वहां उस रात चुनमुनियाँ का नाच था।

चुनमुनियाँ का जलवा

पचगोईंया और नौटंकी नाच की दुनिया में चुनमुनियाँ का नाम बहुत प्रसिद्ध था। हृष्ट-पुष्ट कद-काठी, आकर्षक व्यक्तित्व, मोहक अदाएं और सजीले नैन-नक्श–उसे देखकर ऐसा लगता था मानो कोई अप्सरा स्वर्ग से उतरकर मंच पर आ गई हो।

दस कोस के चारों ओर उसके नृत्य का डंका बजता था। कोई दूसरा नचनिया उसके सामने खड़ा होने की हिम्मत नहीं करता था।

संपन्न घरों में विवाह और अन्य समारोहों में चुनमुनियाँ का नाच करवाना अपनी शान समझा जाता था।

लेकिन चुनमुनियाँ कोई महिला नहीं थी।

वह एक पुरुष था।

उसका वास्तविक नाम था–चुन्नू।

हमारे गांव से सटे गांव का रहने वाला चुन्नू बेहद सादा और सरल इंसान था। पांच फुट का गोरा-चिट्टा युवक। घर की माली हालत खराब थी। पेट की आग ने उसे नृत्य की दुनिया में कदम रखने के लिए मजबूर कर दिया।

सत्रह-अठारह वर्ष की उम्र में उसने नृत्य कला में अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया।

शुरूआत कठिन थी। लेकिन उसने मेहनत की। अभ्यास किया। धीरे-धीरे मंच पर पहचान बनाई। और देखते ही देखते चुन्नू, चुनमुनियाँ बन गया। शोहरत मिली। पैसा मिला। और लोगों का प्यार भी मिला। उसी चुनमुनियाँ का नाच देखने मैं उस रात पिताजी के साथ पहुंचा था। मेरी उम्र उस समय महज छह वर्ष थी। मुझे चुनमुनियाँ के नृत्य की कला से विशेष मतलब नहीं था। मेरे लिए तो ढोल, मजीरा, हारमोनियम, भीड़ और वहां का हो-हल्ला ही सबसे बड़ा आकर्षण था। वैवाहिक उत्सवों में बच्चों की अपनी अलग दुनिया होती है। उनके लिए रात देर तक जागना, भीड़ में घूमना और तरह-तरह की चीजें देखना अपने आप में किसी उत्सव से कम नहीं होता। नाच देखते-देखते रात करीब डेढ़ बज गई। निद्रा देवी अब मुझे अपनी गोद में लेने लगी थीं। मैं तिरपाल पर बैठे-बैठे ऊंघने लगा और एक बार तो गिर भी पड़ा। पिताजी ने मुझे संभाला। फिर जब उन्हें लगा कि अब मैं नींद से नहीं बच पाऊंगा तो उन्होंने मुझे गोद में उठाया और घर ले आए। उस रात मैं सो गया। लेकिन चुनमुनियाँ की छवि मेरे बालमन में कहीं गहरे उतर चुकी थी। पंद्रह-सोलह साल बाद... समय बीतता गया। मई का महीना था। गांव में विवाह कार्यक्रमों की धूम थी। मैं बीकॉम की परीक्षा देकर इलाहाबाद से गांव आया हुआ था। पड़ोस में तिलक का कार्यक्रम था। गांव के मित्रों से पता चला कि उसी कार्यक्रम में आज चुनमुनियाँ का नाच होने वाला है। चुनमुनियाँ का नाम सुनते ही बचपन की यादें ताजा हो गईं। उसका नाच देखे लगभग पंद्रह-सोलह वर्ष बीत चुके थे। मन में फिर से चुनमुनियाँ को देखने की इच्छा जाग उठी। शाम हुई। स्टेज सज गया। वाद्य यंत्र तैयार हो गए। और फिर पर्दे के पीछे से घुंघरुओं की जोरदार आवाज सुनाई दी– छम... छम... छम... चुनमुनियाँ मंच पर दाखिल हुई। उसने वाद्य यंत्रों और दर्शकों का अभिवादन किया और जोरदार ठुमके के साथ नृत्य शुरू कर दिया। दर्शकों की भीड़ से वाह-वाह और सीटियों की आवाज उठने लगी। पूरा पंडाल गूंज उठा। एक ताल पर नाचने के बाद चुनमुनियाँ ने जोरदार घुमरी ली और अचानक रुक गई। अब बारी थी गाने के साथ नाचने की। चुनमुनियाँ का गायन भी बेहद कर्णप्रिय था। गाना शुरू हुआ– नजर लागी राजा तोरे बंगले पे...ह्व और देखते ही देखते भीड़ में से नोटों की बरसात होने लगी। एक गीत समाप्त हुआ। फिर दूसरा। फिर तीसरा। गीत बदलते रहे और नोटों की बारिश होती रही। चुनमुनियाँ बन चुका चुन्नू अब नृत्य कला में पूरी तरह दक्ष हो चुका था। उसकी गायकी भी अच्छी थी। आसपास के गांवों में आए दिन कहीं न कहीं उसके नाच का कार्यक्रम होता और लोग उसका आनंद लेने पहुंचते। उस समय किसे पता था कि जिस कलाकार पर आज नोट बरस रहे हैं, एक दिन वही कलाकार अपनी जिंदगी के अंतिम पड़ाव पर एक-एक सहारे के लिए तरसेगा। जिंदगी आगे बढ़ती रही गर्मी की छुट्टियां समाप्त हो गईं। परीक्षा का परिणाम आया और मुझे उच्च शिक्षा के लिए फिर गांव छोड़ना पड़ा। बीकॉम के बाद एमकॉम किया।

सीए की तैयारी की।

इसी दौरान चार्टर्ड अकाउंटेंट की नौकरी भी लग गई। नौकरी करते-करते साल बीतते गए। गांव आना-जाना लगा रहा, लेकिन अब एक-दो दिन से ज्यादा गांव में रहना संभव नहीं होता था। समय अपनी गति से आगे बढ़ता रहा। मेरा विवाह हुआ। बच्चे हुए। बच्चे बड़े हुए। उनके विवाह हुए। पुत्रवधुएं घर आईं। जिंदगी अपनी सामान्य गति से चलती रही। लेकिन समय ने बहुत कुछ बदल दिया था। विजयदशमी का मेला एक बार विजयदशमी के पावन पर्व पर मैं गांव में ही था। पुत्रवधू के आग्रह पर मैं अपने पौत्र शिवांश को लेकर गांव का मेला देखने पहुंचा। मेले में कोई खास भीड़ नहीं थी। मेरी आंखों के सामने बार-बार बचपन के मेले की तस्वीर उभर रही थी। ओह! कितनी भीड़ हुआ करती थी! कितना उल्लास! कितना अपनापन! अनगिनत दुकानें! हर तरफ चहल-पहल! लेकिन आज का दृश्य बिल्कुल बदल चुका था। चंद दुकानें थीं। चंद लोग थे। राम और रावण की वे कृत्रिम और रोमांचक लड़ाइयां दिखाई नहीं दे रही थीं। जगह-जगह दुर्गा पूजा के पंडाल थे। दुर्गा जी की प्रतिमाएं स्थापित थीं और उनके आसपास बज रहा डीजे कानों को चीर रहा था। कुछ बच्चे डीजे से निकलने वाले पॉप गीतों पर नाच रहे थे। मैंने शिवांश को जलेबी, गुब्बारे, सीटियां, खिलौने आदि दिलाए और मेले से बाहर निकलने लगा। तभी मेरी नजर एक वृद्ध पर पड़ी। वह एक लाठी के सहारे धीरे-धीरे मेले की ओर बढ़ रहा था। उसकी आंखें गड्ढों में धंस चुकी थीं। शरीर पर मांस नाममात्र का था। हड्डियों का ढांचा साफ दिखाई दे रहा था। झुलसी हुई त्वचा और धनुष जैसी झुकी कमर उसके बुढ़ापे की कहानी कह रही थी। मुंह में केवल दो-चार दांत ही बचे थे। वह अपनी ही धुन में कुछ गुनगुनाता हुआ आगे बढ़ रहा था। जैसे ही वह मेरे करीब आया, मैंने जिज्ञासावश उसे रोक लिया। मैंने पूछा– दादा, आपका घर कहां है? उसने चेहरे को बड़ी मुश्किल से ऊपर उठाया और मुझे गौर से देखते हुए कहा– बाबू, हमको नहीं पहचान रहे हो? मैंने कहा– नहीं दादा। हम यहां रहते नहीं हैं, इसलिए पूछ रहे हैं। वह वृद्ध मुस्कुराया। फिर बोला– अरे बाबू, मैं चुनमुनियाँ डांसर हूं।मेरे पैरों तले जैसे जमीन खिसक गई। मेरे कानों में एक साथ घुंघरुओं की आवाज गूंज उठी– छम... छम... छम... मेरी आंखों के सामने वर्षों पुराना मंच घूम गया। वही चुनमुनियाँ! वही ठुमके! वही तालियां! वही सीटियां! वही नोटों की बरसात! क्या यह सचमुच वही चुनमुनियाँ थी? वह आगे बोलता रहा– क्या करूं बाबू, बुढ़ापा है ना। अब शरीर में वो बात कहां। लड़के अपने-अपने में मस्त हैं। पत्नी भी दो बरस पहले ही साथ छोड़ गई। क्या बताऊं बाबू... धीरे-धीरे समय काट रहा हूं।ह्व मैं निःशब्द था। जिस कलाकार के एक ठुमके पर हजारों लोग झूम उठते थे, आज वही कलाकार एक लाठी के सहारे जीवन की आखिरी पगडंडी पर चल रहा था। जिसके नाच पर कभी नोटों की बारिश होती थी, आज उसके जीवन में अभाव की बारिश थी। जिसे देखने के लिए कभी लोगों का हुजूम उमड़ता था, आज वह भीड़ में भी अकेला था। तालियों से तन्हाई तक मेरा कलेजा धक से कर गया। मैं अतीत में चला गया। छह वर्ष का वह बच्चा याद आया, जो चाचा जी के साथ नाच देखने के लिए रोया था। वह रात याद आई। पिताजी की गोद याद आई। चुनमुनियाँ का नृत्य याद आया। फिर वह दूसरी रात याद आई जब मैंने बीकॉम की परीक्षा के बाद उसे मंच पर नाचते देखा था। नोटों की बरसात याद आई। तालियों की गूंज याद आई। और अब सामने वही कलाकार खड़ा था। लेकिन सब कुछ बदल चुका था। समय ने मंच छीन लिया था। शरीर ने साथ छोड़ दिया था। भीड़ गायब हो गई थी। तालियां खामोश हो चुकी थीं।

अब केवल लाठी थी और जीवन की लंबी थकान।

उसी समय पौत्र शिवांश ने मेरा हाथ खींचा। दादाजी, घर चलो। मैंने जेब से दो सौ रुपये का एक नोट निकाला और उस बुजुर्ग के हाथ में रख दिया। उसने मेरी ओर देखा। उसकी आंखों में क्या था–आभार, बेबसी, पहचान या बीते दिनों की कोई स्मृति–मैं समझ नहीं सका। मैं शिवांश के साथ आगे बढ़ गया। लेकिन मेरा मन वहीं पीछे छूट गया था। चुनमुनियाँ की कहानी यहीं खत्म नहीं होती उस दिन मेले से लौटते समय मेरे भीतर एक सवाल लगातार घूमता रहा– क्या हम अपने कलाकारों को केवल उनके चमकते दिनों तक ही याद रखते हैं? जब तक मंच पर रोशनी रहती है, हम तालियां बजाते हैं। जब तक शरीर में ताकत रहती है, हम उनके नृत्य का आनंद लेते हैं। जब तक आवाज में मिठास रहती है, हम उन्हें बार-बार सुनते हैं। लेकिन जब उम्र ढल जाती है, जब घुंघरू उतर जाते हैं और मंच की रोशनी बुझ जाती है, तब क्या हम उन्हें याद रखते हैं? चुनमुनियाँ केवल एक नर्तक नहीं था। वह उस दौर की लोक संस्कृति का हिस्सा था। उसने अपनी कला से न जाने कितने विवाह समारोहों को यादगार बनाया होगा। कितनी रातों को अपनी प्रस्तुति से लोगों का मनोरंजन किया होगा। कितने लोगों ने उसके नृत्य पर तालियां बजाई होंगी और कितनों ने उसके हाथों में रुपये रखे होंगे। लेकिन उम्र के अंतिम पड़ाव पर उसे सहारा देने वाला कोई नहीं था। यह कहानी केवल चुन्नू या चुनमुनियाँ की कहानी नहीं है। यह उन तमाम लोक कलाकारों की कहानी है जो अपनी जवानी में हमारी खुशियों का हिस्सा बनते हैं और बुढ़ापे में समाज की स्मृतियों से बाहर हो जाते हैं। वक्त की सबसे बड़ी सच्चाई समय किसी के लिए नहीं रुकता। जो आज जवान है, कल बूढ़ा होगा। जो आज मंच पर है, कल मंच से नीचे होगा। जो आज दूसरों का मनोरंजन कर रहा है, कल उसे किसी के सहारे की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए किसी इंसान की कीमत उसके वर्तमान रूप से नहीं, उसके पूरे जीवन के योगदान से तय होनी चाहिए। चुनमुनियाँ के ठुमकों पर बरसे नोट शायद उसके जीवन के अंतिम दिनों में उसके काम नहीं आए, लेकिन उन ठुमकों ने जिन लोगों को खुशी दी, क्या उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं थी? शायद यही इस कहानी का सबसे बड़ा सवाल है। और शायद यही समाज के सामने सबसे बड़ा आईना भी। मेले से लौटते समय मेरे कानों में डीजे की तेज आवाज नहीं, बल्कि पुराने घुंघरुओं की धीमी-सी आवाज गूंज रही थी– छम... छम... छम... मैंने पीछे मुड़कर देखा। वह बूढ़ा चुनमुनियाँ अपनी लाठी के सहारे मेले की ओर बढ़ रहा था। कभी उसी के आने पर मेले में भीड़ उमड़ती थी। आज वह खुद भीड़ के बीच अपने लिए जगह तलाश रहा था। और मैं सोच रहा था– तालियां खत्म हो जाती हैं, मंच खाली हो जाता है, रोशनी बुझ जाती है; लेकिन कलाकार का जीवन उसके बाद भी चलता रहता है। चुनमुनियाँ की कहानी हमें यही याद दिलाती है कि किसी कलाकार की कला का सम्मान केवल उसके प्रदर्शन के समय नहीं, बल्कि उसके जीवन के अंतिम पड़ाव तक होना चाहिए। क्योंकि जिस समाज को अपने कलाकारों की जवानी याद रहती है, उसे उनके बुढ़ापे की चिंता भी करनी चाहिए।

यही इंसानियत है।

यही संवेदना है।

और शायद यही हमारी संस्कृति की असली पहचान भी।

जब परीक्षा व्यवस्था पर उठे सवाल, तब जवाबदेही सबसे जरूरी

भारतार्थ खबर | Bhaarataarth.com

भारत में शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाएं केवल नौकरी पाने का माध्यम नहीं हैं। करोड़ों युवाओं के लिए परीक्षा व्यवस्था उनके भविष्य, परिवार की उम्मीदों और वर्षों की मेहनत का आधार है। इसलिए जब प्रश्नपत्र लीक, परीक्षा में अनियमितता, मूल्यांकन संबंधी विवाद या भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी के आरोप सामने आते हैं, तो यह केवल एक प्रशासनिक समस्या नहीं रह जाती–यह युवाओं के विश्वास का प्रश्न बन जाती है। हाल के दिनों में परीक्षा संबंधी विवादों और छात्र आंदोलनों ने इसी चिंता को फिर सामने ला दिया है। आज भी अलग-अलग राज्यों में छात्र भर्ती परीक्षाओं, छात्रवृत्ति और शैक्षणिक व्यवस्था से जुड़ी समस्याओं को लेकर आवाज उठा रहे हैं। युवा सड़क पर क्यों उतरता है? किसी भी लोकतंत्र में यह सवाल महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थी कक्षा और पुस्तकालय छोड़कर सड़क पर आने को क्यों मजबूर होता है।

एक युवा जब प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करता है तो वह केवल किताबें नहीं पढ़ता। परिवार अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार उसकी तैयारी में निवेश करता है। विद्यार्थी वर्षों तक समय, मेहनत और अवसरों का त्याग करता है। ऐसे में परीक्षा प्रक्रिया में गड़बड़ी की खबर उसके लिए सामान्य समाचार नहीं होती, बल्कि उसके भविष्य पर सीधा आघात होती है। छात्रों की शिकायत सही है या गलत, इसका निर्णय जांच और न्यायिक प्रक्रिया से होना चाहिए। लेकिन उनकी शिकायत सुनना सरकार और संबंधित संस्थाओं की जिम्मेदारी है। परीक्षा की निष्पक्षता ही व्यवस्था की विश्वसनीयता है आज तकनीक ने प्रश्नपत्र तैयार करने, परीक्षा आयोजित करने और परिणाम जारी करने की प्रक्रिया को अधिक सुरक्षित बनाने के अनेक साधन उपलब्ध कराए हैं। इसके बावजूद यदि प्रश्नपत्र लीक होने या परीक्षा में अनियमितता जैसी घटनाएं सामने आती हैं तो यह केवल किसी एक व्यक्ति की गलती नहीं मानी जा सकती। सवाल उठना स्वाभाविक है–सुरक्षा व्यवस्था में कमी कहां हुई? जिम्मेदारी किसकी थी? और सबसे महत्वपूर्ण, भविष्य में ऐसी घटना दोबारा न हो, इसके लिए क्या व्यवस्था बदली जाएगी? हाल में छत्तीसगढ़ में एक कृषि विश्वविद्यालय की परीक्षा से जुड़े प्रश्नपत्र लीक मामले में प्रोफेसर और छात्रों की गिरफ्तारी की खबर ने भी परीक्षा सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, प्रश्नपत्र की तस्वीरें लेने के लिए तकनीकी उपकरण का इस्तेमाल किया गया था।

इस प्रकार की घटनाएं बताती हैं कि परीक्षा सुरक्षा को केवल कागजी नियमों से नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीक और जवाबदेही के मजबूत तंत्र से सुरक्षित करना होगा। लाठी नहीं, संवाद चाहिए छात्रों के आंदोलन का जवाब पुलिस बल से देना अंतिम विकल्प होना चाहिए। कानून-व्यवस्था बनाए रखना सरकार का दायित्व है, लेकिन शांतिपूर्ण प्रदर्शन और हिंसक गतिविधि के बीच स्पष्ट अंतर किया जाना चाहिए। यदि विद्यार्थी अपनी मांग लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं तो पहले संवाद होना चाहिए। प्रतिनिधिमंडल से बातचीत, लिखित आश्वासन, समयबद्ध जांच और सार्वजनिक रूप से कार्रवाई की जानकारी–ये लोकतांत्रिक व्यवस्था के स्वाभाविक रास्ते हैं। राजनीतिक दलों को भी छात्रों के आंदोलनों को अपने राजनीतिक संघर्ष का हथियार बनाने से बचना चाहिए। छात्र किसी पार्टी की संपत्ति नहीं हैं। उनकी मांग जायज है तो सत्ता पक्ष को सुनना चाहिए और गलत है तो तथ्यों के साथ समझाना चाहिए। सरकारों के लिए परीक्षा केवल परीक्षा नहीं

सरकार चाहे केंद्र की हो या राज्य की, उसे यह समझना होगा कि आज का युवा पहले से अधिक जागरूक है। वह सूचना तक तेजी से पहुंचता है, सवाल पूछता है और जवाबदेही चाहता है। इसीलिए परीक्षा व्यवस्था में तीन बातें अनिवार्य होनी चाहिए–

पहली–पारदर्शिता। परीक्षा की पूरी प्रक्रिया के महत्वपूर्ण चरणों की निगरानी और आवश्यक जानकारी सार्वजनिक हो। दूसरी–जवाबदेही। अनियमितता प्रमाणित होने पर जिम्मेदार व्यक्ति या संस्था के खिलाफ समयबद्ध कार्रवाई हो। ीसरी–छात्र हित।

यदि किसी परीक्षा में गड़बड़ी छात्रों की गलती के बिना हुई है तो उसका पूरा बोझ विद्यार्थियों पर नहीं डाला जाना चाहिए। पुनर्परीक्षा, परिणाम की समीक्षा या अन्य उचित विकल्पों पर संवेदनशीलता से निर्णय होना चाहिए। राजनीति से ऊपर उठने का समय दुर्भाग्य यह है कि छात्र आंदोलनों पर भी राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप शुरू हो जाते हैं। सत्ता पक्ष विपक्ष को जिम्मेदार ठहराता है और विपक्ष सरकार पर युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ करने का आरोप लगाता है। लेकिन बेरोजगार युवा के लिए यह बहस महत्वपूर्ण नहीं है कि गलती किस पार्टी की है। उसके लिए महत्वपूर्ण है–परीक्षा कब होगी, परिणाम कब आएगा और नौकरी कब मिलेगी? राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि युवा शक्ति को केवल चुनावी नारों में इस्तेमाल करने के बजाय उसकी वास्तविक समस्याओं का समाधान करना अधिक महत्वपूर्ण है।

भारत युवा देश है। यदि युवाओं को यह विश्वास हो जाए कि मेहनत से अधिक प्रभावशाली कोई दूसरा रास्ता है, तो यह केवल परीक्षा व्यवस्था की हार नहीं होगी, बल्कि समाज की नैतिक नींव के लिए भी गंभीर खतरा होगा। इसलिए आज सबसे बड़ा सुधार परीक्षा प्रणाली में केवल तकनीकी बदलाव नहीं, बल्कि विश्वास की पुनर्स्थापना है। सरकारों को चाहिए कि प्रश्नपत्र की सुरक्षा से लेकर परिणाम तक पूरी व्यवस्था को अधिक पारदर्शी बनाएं। जांच एजेंसियों को निष्पक्षता से काम करने दिया जाए। दोषी पाए जाने वालों पर कठोर कार्रवाई हो और निर्दोष विद्यार्थियों के भविष्य की रक्षा की जाए। युवा जब सवाल पूछे तो उसे विरोधी नहीं, राष्ट्र की आवाज समझना चाहिए। क्योंकि जिस देश की परीक्षा व्यवस्था पर युवाओं का विश्वास कायम रहता है, उसी देश की प्रतिभा सही दिशा में आगे बढ़ती है।

पहाड़ की आवाज, समाधान की घड़ी

भारतार्थ खबर | Bhaarataarth.com

दार्जिलिंग, कालिम्पोंग और कर्सियांग की पहाड़ियां केवल प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे दशकों से पहचान, अधिकार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की जटिल मांगों की साक्षी भी रही हैं। आज केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में हुई उच्चस्तरीय बैठक ने एक बार फिर यह उम्मीद जगाई है कि संवाद के माध्यम से स्थायी समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं। गोरखालैंड की मांग वर्षों से भावनात्मक और राजनीतिक दोनों स्तरों पर मौजूद रही है। आंदोलन, बंद और टकराव ने क्षेत्र के विकास, पर्यटन, शिक्षा और रोजगार पर गहरा प्रभाव डाला। सबसे अधिक नुकसान आम नागरिकों और युवाओं को उठाना पड़ा, जिनकी आकांक्षाएं अक्सर राजनीतिक खींचतान में दब गईं।

आज की बैठक का महत्व केवल इसमें शामिल नेताओं से नहीं, बल्कि इस बात से है कि केंद्र, राज्य और पहाड़ के प्रतिनिधि एक ही मेज पर बैठे। लोकतंत्र में यही सबसे प्रभावी रास्ता है–संवाद, सहमति और संवैधानिक समाधान। यदि बातचीत केवल औपचारिकता बनकर रह गई, तो अविश्वास और गहरा होगा; लेकिन यदि इससे समयबद्ध और पारदर्शी प्रक्रिया निकली, तो यह पूर्वोत्तर और पहाड़ी क्षेत्रों की राजनीति के लिए एक नया मॉडल बन सकती है। स्थायी समाधान का अर्थ केवल नई प्रशासनिक व्यवस्था नहीं है। इसका अर्थ है–स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार, चाय बागानों के श्रमिकों का सम्मानजनक जीवन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और सांस्कृतिक पहचान की संवैधानिक सुरक्षा। राजनीतिक समाधान तभी सफल माना जाएगा, जब उसका लाभ आम नागरिक तक पहुंचे। आज आवश्यकता है कि सभी पक्ष चुनावी लाभ से ऊपर उठकर विश्वास बहाली को प्राथमिकता दें। पहाड़ को न तो केवल आंदोलन चाहिए और न केवल आश्वासन; उसे चाहिए स्थिरता, विकास और सम्मान। निष्कर्षः दार्जिलिंग का भविष्य टकराव में नहीं, बल्कि भरोसे और संवाद में है। यदि आज की पहल ईमानदारी से आगे बढ़ती है, तो यह केवल पहाड़ का नहीं, भारतीय संघवाद की परिपक्वता का भी महत्वपूर्ण अध्याय साबित हो सकती है।

मीडिया मजबूत होगा, तो समाज की आवाज मजबूत होगी

लेखकः सांवलराम चौधरी असाडा
एडिटर इन चीफ, पटेल टीवी, जोधपुर (राज.)
+91 94141 08444

एक कहावत है– तलवार से भारी होती है कलम। यह केवल एक कहावत नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक समाज की उस शक्ति का प्रतीक है, जो बिना किसी हिंसा के विचारों को जन्म देती है, व्यवस्था को आईना दिखाती है और समाज की दिशा बदलने की क्षमता रखती है। तलवार किसी व्यक्ति को परास्त कर सकती है, लेकिन कलम विचारों को जन्म देती है और विचार ही किसी समाज तथा राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करते हैं। पत्रकारिता इसी कलम की शक्ति का संगठित और जिम्मेदार स्वरूप है। एक ईमानदार पत्रकार की कलम सत्ता के गलियारों तक आम आदमी की आवाज पहुंचा सकती है। वह उन सवालों को सामने ला सकती है, जिन्हें दबाने या नजरअंदाज करने का प्रयास किया जाता है। वह समाज की समस्याओं को केवल समाचार नहीं बनाती, बल्कि उन समस्याओं के समाधान के लिए जनचेतना भी पैदा करती है।

यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि कुछ बिकाऊ, चाटुकार और स्वार्थपरक पत्रकारों ने मीडिया की छवि को नुकसान पहुंचाया है। जब पत्रकारिता निजी हितों, राजनीतिक दबाव, आर्थिक लाभ या व्यक्तिगत संबंधों के आगे झुकती है, तब सबसे बड़ा नुकसान जनता का होता है। लेकिन कुछ लोगों के कारण पूरी पत्रकारिता को कठघरे में खड़ा करना भी उचित नहीं है। आज भी देश में ऐसे असंख्य पत्रकार हैं जो सीमित संसाधनों के बावजूद ईमानदारी, साहस और जिम्मेदारी के साथ अपनी भूमिका निभा रहे हैं। यही पत्रकारिता लोकतंत्र की वास्तविक ताकत है।

मीडिया केवल समाचार नहीं, समाज की चेतना है

मीडिया का काम केवल घटना घटने के बाद उसकी सूचना देना नहीं है। मीडिया का वास्तविक दायित्व इससे कहीं बड़ा है। वह समाज में जागृति पैदा करता है, जनता को उसके अधिकारों और कर्तव्यों से परिचित कराता है तथा शासन-प्रशासन के कामकाज पर निगरानी रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब किसी गरीब, पीड़ित, शोषित या वंचित व्यक्ति की आवाज कहीं नहीं सुनी जाती, तब एक जिम्मेदार पत्रकार उसकी आवाज बन सकता है। किसी गांव में सड़क नहीं बन रही हो, किसी अस्पताल में मरीजों को सुविधा नहीं मिल रही हो, किसी सरकारी योजना का लाभ पात्र व्यक्ति तक नहीं पहुंच रहा हो या किसी अधिकारी की लापरवाही से जनता परेशान हो–इन विषयों को सामने लाना पत्रकारिता का सामाजिक दायित्व है। मीडिया को आवश्यकता पड़ने पर शासन-प्रशासन से आंख से आंख मिलाकर सवाल पूछने की क्षमता बनाए रखनी होगी। क्योंकि लोकतंत्र में सवाल पूछना विरोध नहीं, बल्कि व्यवस्था को जवाबदेह बनाने की प्रक्रिया है। जहां सवाल पूछने की परंपरा समाप्त हो जाती है, वहां व्यवस्था धीरे-धीरे निरंकुश होने लगती है। इसलिए स्वतंत्र और निर्भीक मीडिया किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए अनिवार्य है।

सोशल मीडिया की चुनौती और प्रिंट मीडिया की स्थायी भूमिका आज सोशल मीडिया ने सूचना की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। कुछ ही सेकंड में कोई घटना हजारों-लाखों लोगों तक पहुंच सकती है। मोबाइल फोन ने हर व्यक्ति को सूचना का संभावित वाहक बना दिया है। यह निश्चित रूप से सूचना के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव है। लेकिन सोशल मीडिया की अपनी सीमाएं भी हैं।

सोशल मीडिया पर आज की खबर कुछ घंटों बाद पुरानी हो जाती है और नई सूचनाओं की भीड़ में पीछे चली जाती है। कई बार अपुष्ट सूचनाएं, अधूरी जानकारी और अफवाहें भी तेजी से फैल जाती हैं। ऐसे वातावरण में विश्वसनीयता, तथ्य-जांच और जिम्मेदार पत्रकारिता का महत्व और बढ़ जाता है।

इसके विपरीत प्रिंट मीडिया किसी घटना का दस्तावेज तैयार करता है। वर्षों बाद भी किसी समाचार पत्र के पुराने अंक को देखकर उस समय की घटनाओं, परिस्थितियों और सामाजिक वातावरण को समझा जा सकता है। इतिहास के अनेक महत्वपूर्ण अध्याय इस बात के प्रमाण हैं कि समाचार पत्रों ने समाज और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए सोशल मीडिया को प्रिंट मीडिया का दुश्मन मानने के बजाय दोनों की भूमिका को अलग-अलग समझने की आवश्यकता है। सोशल मीडिया गति देता है, जबकि जिम्मेदार पत्रकारिता विश्वसनीयता, संदर्भ और दस्तावेजी महत्व प्रदान करती है। आने वाले समय में मीडिया का भविष्य उसी संस्थान और पत्रकार का होगा जो तेजी के साथ विश्वसनीयता और तथ्यपरकता को बनाए रख सकेगा। जन्मभूमि से दूर कर्मभूमि में रहने वालों के लिए मीडिया की भूमिका आज बड़ी संख्या में लोग अपनी जन्मभूमि छोड़कर देश के अलग-अलग हिस्सों में अपनी कर्मभूमि बना रहे हैं। कोई रोजगार के लिए दूसरे शहर में है, कोई व्यापार के लिए महानगर पहुंचा है और कोई अपने बच्चों के भविष्य के लिए किसी नए स्थान पर जीवन बिता रहा है। जब व्यक्ति अपनी जन्मभूमि से दूर होता है, तब स्थानीय समाज और स्थानीय परिस्थितियों में उसकी आवाज कई बार कमजोर पड़ जाती है। ऐसे समय में स्थानीय मीडिया उसकी समस्याओं और अधिकारों को सामने लाने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

कर्मभूमि में रहने वाले लोगों के लिए स्थानीय समाचार पत्र केवल समाचार का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक संपर्क और विश्वास का माध्यम भी हो सकते हैं। किसी समुदाय के आयोजन, सामाजिक गतिविधि, जनसमस्या, प्रशासनिक मुद्दे या नागरिक अधिकार से जुड़े विषयों को स्थानीय मीडिया उचित मंच दे सकता है। विकट परिस्थितियों में जब कोई व्यक्ति अकेला पड़ जाता है, तब निष्पक्ष मीडिया उसके साथ खड़े होकर उसकी बात समाज और प्रशासन तक पहुंचा सकता है। यही स्थानीय पत्रकारिता की वास्तविक शक्ति है।

लेकिन मीडिया मजबूत कैसे रहेगा?

यह सबसे महत्वपूर्ण सवाल है।

क्या केवल पत्रकारों से अपेक्षा की जाए कि वे हर परिस्थिति में जनता की आवाज उठाते रहें? क्या समाज की कोई जिम्मेदारी नहीं है?

संसार की प्रत्येक व्यवस्था एक-दूसरे की पूरक होती है। पत्रकारिता भी इससे अलग नहीं है। महंगाई, तकनीकी बदलाव, बढ़ती प्रतिस्पर्धा, विज्ञापन बाजार की चुनौतियां और सोशल मीडिया के दबाव के बीच ईमानदार पत्रकारिता को टिकाए रखना आसान नहीं है।

यदि समाज चाहता है कि मीडिया उसके संकट के समय उसके साथ खड़ा हो, उसकी समस्याओं को उठाए और शासन-प्रशासन से सवाल करे, तो समाज को भी कठिन समय में मीडिया के साथ खड़ा होना होगा।

यह सहयोग केवल आर्थिक नहीं होना चाहिए। पत्रकार का मनोबल बढ़ाना, उसकी निष्पक्षता का सम्मान करना, सही सूचना उपलब्ध कराना, पत्रकारों के साथ सामाजिक रूप से खड़ा होना और सत्य को सामने लाने वाले प्रयासों को समर्थन देना भी समाज की जिम्मेदारी है।

मीडिया के सामने दो रास्ते

आज मीडिया के सामने मूल रूप से दो रास्ते दिखाई देते हैं।

पहला रास्ता है– सत्ता और व्यवस्था से समझौता करके पत्रकारिता करना।

दूसरा रास्ता है– कठिन परिस्थितियों के बावजूद पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों पर कायम रहना।

पहला रास्ता आसान दिखाई दे सकता है। समझौते से तत्काल सुविधा मिल सकती है, विरोध कम हो सकता है और कई प्रकार के लाभ भी प्राप्त हो सकते हैं। लेकिन इसकी कीमत जनता की आवाज को चुकानी पड़ती है।

जब मीडिया सत्ता के सामने सवाल पूछना छोड़ देता है, तब आम आदमी के सवाल भी धीरे-धीरे दबने लगते हैं।

दूसरा रास्ता कठिन है। निष्पक्ष पत्रकारिता के कारण आलोचना झेलनी पड़ सकती है, आर्थिक कठिनाइयां आ सकती हैं और कई प्रकार के दबावों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन यही रास्ता पत्रकारिता की विश्वसनीयता को बचाता है।

एक पत्रकार के लिए सबसे बड़ी पूंजी उसका विश्वास है। यदि जनता को विश्वास हो कि पत्रकार किसी दबाव, लालच या निजी स्वार्थ के बजाय तथ्य और जनहित के आधार पर अपनी बात रखता है, तो वही पत्रकार समाज में स्थायी सम्मान प्राप्त करता है।

आम आदमी की भी जिम्मेदारी है

हम अक्सर कहते हैं कि मीडिया को निष्पक्ष होना चाहिए। पत्रकारों को ईमानदार होना चाहिए। मीडिया को जनता की आवाज बनना चाहिए।

लेकिन हमें यह भी पूछना चाहिए– क्या जनता मीडिया की आवाज बनने वाले पत्रकारों के साथ खड़ी है?

यदि कोई पत्रकार आम आदमी की समस्या उठाता है, भ्रष्टाचार पर सवाल करता है, प्रशासन की लापरवाही को सामने लाता है और दबे हुए व्यक्ति को मंच देता है, तो समाज को उसके प्रयास का समर्थन करना चाहिए।

यदि ऐसे पत्रकारों को सामाजिक और आर्थिक सहयोग नहीं मिलेगा, यदि उन्हें लगातार अकेला छोड़ दिया जाएगा और उनकी ईमानदारी की कोई कीमत नहीं होगी, तो एक समय ऐसा भी आ सकता है जब वे कठिन परिस्थितियों के सामने कमजोर पड़ने लगें।

यह किसी एक पत्रकार का नुकसान नहीं होगा। यह पूरे समाज का नुकसान होगा।

क्योंकि पत्रकार के पास केवल कलम होती है, लेकिन उस कलम के पीछे समाज का विश्वास और सहयोग उसकी वास्तविक शक्ति बनता है।

मीडिया को बचाना नहीं, अपनी आवाज को बचाना है

आज हमें इस बात को समझने की आवश्यकता है कि मीडिया की स्वतंत्रता केवल पत्रकारों का विषय नहीं है। यह आम आदमी के अधिकारों से सीधे जुड़ा हुआ विषय है।

यदि मीडिया स्वतंत्र रहेगा तो जनता अपनी समस्याएं उठा सकेगी। यदि मीडिया निर्भीक रहेगा तो शासन-प्रशासन से सवाल पूछे जा सकेंगे। यदि मीडिया तथ्यपरक रहेगा तो समाज को सही जानकारी मिल सकेगी। और यदि मीडिया आर्थिक एवं सामाजिक रूप से मजबूत रहेगा तो पत्रकार दबावों के बावजूद अपनी जिम्मेदारी निभाने में सक्षम होंगे।

इसलिए बात केवल मीडिया को बचाने की नहीं है– बात अपनी आवाज को बचाने की है।

जिस दिन समाज ने अपनी आवाज उठाने वाले माध्यमों को कमजोर कर दिया, उस दिन आम आदमी के सामने अपनी बात प्रभावी ढंग से रखने के विकल्प भी सीमित हो जाएंगे।

आलोचना जरूरी है, लेकिन नकारात्मकता नहीं

मीडिया की आलोचना होनी चाहिए। गलत समाचार, पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग, तथ्यहीन सामग्री या पत्रकारिता के नाम पर किसी भी प्रकार के स्वार्थ की आलोचना लोकतंत्र के लिए आवश्यक है।

लेकिन कुछ गलत उदाहरणों के आधार पर पूरे मीडिया जगत को बदनाम करना भी उचित नहीं है।

जिस प्रकार किसी एक डॉक्टर की गलती के कारण पूरी चिकित्सा व्यवस्था को गलत नहीं कहा जा सकता, उसी प्रकार कुछ पत्रकारों के गलत आचरण के कारण पूरी पत्रकारिता को कटघरे में खड़ा नहीं किया जा सकता।

जरूरत है अच्छे और बुरे में अंतर करने की।

समाज को ऐसे पत्रकारों और मीडिया संस्थानों को पहचानना होगा जो जनहित, तथ्य और निष्पक्षता को प्राथमिकता देते हैं। उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा तो पत्रकारिता की सकारात्मक धारा मजबूत होगी।

नई पीढ़ी और पत्रकारिता

आज की नई पीढ़ी के सामने सूचना के अनेक स्रोत हैं। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, वीडियो प्लेटफॉर्म और डिजिटल समाचार माध्यमों ने सूचना प्राप्त करना आसान बना दिया है। लेकिन सूचना की अधिकता का अर्थ सही जानकारी की उपलब्धता नहीं है।

नई पीढ़ी को यह समझना होगा कि हर वायरल संदेश समाचार नहीं होता और हर लोकप्रिय पोस्ट सत्य नहीं होती।

यही कारण है कि जिम्मेदार पत्रकारिता की आवश्यकता भविष्य में और बढ़ने वाली है।

नई पीढ़ी को तथ्य-जांच, स्रोतों की विश्वसनीयता, सामाजिक जिम्मेदारी और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ जुड़े दायित्वों को समझना होगा। पत्रकारिता केवल कैमरा, मोबाइल या माइक्रोफोन पकड़ने का नाम नहीं है। पत्रकारिता सत्य की खोज, जनहित की चिंता और जवाबदेही की मांग करने का नाम है।

समाज और मीडिया साथ-साथ चलें

मीडिया और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। समाज पत्रकार को खबर देता है और पत्रकार समाज की आवाज को व्यापक मंच देता है। जनता समस्याएं बताती है और मीडिया उन समस्याओं को शासन-प्रशासन तक पहुंचाता है।

इसलिए दोनों के बीच विश्वास का रिश्ता होना आवश्यक है।

मीडिया को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। उसे सनसनी के बजाय सत्य, अफवाह के बजाय तथ्य और व्यक्तिगत हित के बजाय जनहित को प्राथमिकता देनी होगी।

वहीं समाज को भी पत्रकारिता के महत्व को समझना होगा। केवल उस समय मीडिया को याद करना पर्याप्त नहीं है, जब स्वयं की समस्या समचार बनानी हो।

कृतज्ञता से बदलती है जीवन-दृष्टि: मुनि वीरसागर

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 22 अगस्त 2026। ज्ञानोदय परिसर स्थित इनर रिफ्लेक्शन सेंटर, तुबरहल्ली में चल रहे आध्यात्मिक प्रवचन क्रम में शनिवार को निर्यापक श्रमण मुनि श्री 108 वीरसागर जी महाराज ने कृतज्ञता के व्यावहारिक लाभ विषय पर प्रेरणादायी प्रवचन दिया। उन्होंने कृतज्ञता को केवल धन्यवाद देने की औपचारिकता न मानकर जीवन-दृष्टि में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाली साधना बताया। मुनिश्री ने कहा कि मनुष्य जिस विषय पर बार-बार ध्यान केंद्रित करता है, उसका प्रभाव उसकी सोच और व्यवहार पर पड़ता है। लगातार शिकायत, असंतोष और तुलना व्यक्ति में नकारात्मकता बढ़ा सकती है, जबकि जीवन में उपलब्ध लोगों, अवसरों और संसाधनों के प्रति कृतज्ञता का भाव सोच को अधिक सकारात्मक और संतुलित बनाने में सहायक होता है। कृतज्ञता से मानसिक संतुलन

मुनि श्री वीरसागर जी महाराज ने आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ आधुनिक मनोविज्ञान के संदर्भ में बताया कि कृतज्ञता का नियमित अभ्यास व्यक्ति को तनावपूर्ण विचारों से ध्यान हटाकर जीवन के सकारात्मक पक्षों पर केंद्रित करने में मदद कर सकता है। इससे मानसिक स्थिरता, आत्मचिंतन और संतुलित व्यवहार को बढ़ावा मिल सकता है।

उन्होंने कहा कि सकारात्मक भावनाओं और शांत चिंतन का अभ्यास व्यक्ति को तनावपूर्ण परिस्थितियों से बेहतर ढंग से निपटने की क्षमता दे सकता है। हालांकि कृतज्ञता समस्याओं को समाप्त करने का उपाय नहीं है, लेकिन कठिन परिस्थितियों को देखने का दृष्टिकोण अवश्य बदल सकती है। अहंकार से विनम्रता की ओर मुनिश्री ने कृतज्ञता और अहंकार के संबंध को स्पष्ट करते हुए कहा कि अहंकार व्यक्ति को अपनी उपलब्धियों का श्रेय केवल स्वयं को देने की ओर ले जाता है। इसके विपरीत कृतज्ञता यह स्वीकार करने की दृष्टि देती है कि जीवन में सफलता के पीछे परिवार, गुरु, मित्रों, सहयोगियों, समाज और परिस्थितियों का भी योगदान रहता है। उन्होंने कहा कि अपनी कमियों को स्वीकार करना और दूसरों के योगदान का सम्मान करना विनम्रता की शुरूआत है। विनम्रता से क्षमा और आत्मीयता का भाव विकसित होता है, जो मानसिक शांति का आधार बन सकता है। शिकायत नहीं, समाधान पर ध्यान

मुनि श्री ने कहा कि व्यक्ति अक्सर इस बात पर अधिक ध्यान देता है कि उसके पास क्या नहीं है। इससे शिकायत, तुलना और असंतोष की भावना बढ़ती है। कृतज्ञता व्यक्ति को यह देखने की प्रेरणा देती है कि उसके पास क्या उपलब्ध है और उसका सार्थक उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि उपलब्ध संसाधनों, समय, संबंधों और अवसरों का सम्मान करने से अभाव की मानसिकता के स्थान पर संभावना की दृष्टि विकसित होती है। संबंधों में बढ़ता है सम्मान मुनिश्री ने कहा कि कृतज्ञता का प्रभाव पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में भी दिखाई देता है। जब व्यक्ति दूसरों की कमियों के बजाय उनके सहयोग और योगदान को पहचानता है, तो संबंधों में सम्मान, विश्वास और आत्मीयता बढ़ सकती है।

उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रेरित करते हुए कहा कि परिवार, मित्र, सहयोगी, गुरु और समाज से मिलने वाले सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करना केवल शिष्टाचार नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर विनम्रता और सकारात्मकता विकसित करने का माध्यम है। कठिनाइयों से सीखने की प्रेरणा प्रवचन में जीवन की चुनौतियों का उल्लेख करते हुए मुनिश्री ने कहा कि परिस्थितियां हमेशा मनुष्य के अनुकूल नहीं होतीं। ऐसे समय में केवल यह सोचने के बजाय कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ, यह विचार करना अधिक उपयोगी है कि इस परिस्थिति से मैं क्या सीख सकता हूं। उन्होंने कहा कि यह दृष्टिकोण व्यक्ति में मानसिक और भावनात्मक दृढ़ता विकसित करने में सहायक हो सकता है। चुनौतियों से सीखकर आगे बढ़ने की क्षमता जीवन को अधिक सार्थक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

कृतज्ञता को बनाएं दैनिक संस्कार मुनि श्री वीरसागर जी महाराज ने श्रद्धालुओं से कृतज्ञता को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि दिन के अंत में कुछ क्षण यह विचार करना चाहिए कि आज किन लोगों का सहयोग मिला, कौन-सी अच्छी बातें जीवन में हुईं और कौन-से अवसर उपलब्ध हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि कृतज्ञता का अर्थ समस्याओं को नकारना नहीं, बल्कि समस्याओं के बीच भी सकारात्मक पक्ष को देखने की क्षमता विकसित करना है। दृष्टिकोण बदलने से विचार, विचारों से व्यवहार और व्यवहार से जीवन की दिशा में परिवर्तन संभव है। प्रवचन के समापन पर मुनिश्री ने श्रद्धालुओं से अहंकार कम करने, दूसरों के योगदान को स्वीकार करने, क्षमा का भाव अपनाने और उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि कृतज्ञता मन को हल्का करने, संबंधों में मधुरता लाने और जीवन में संतोष का भाव बढ़ाने वाली साधना है।

श्रीराम के आदर्शों से जीवन को मिले सही राह

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 22 अगस्त 2026। श्री मातेश्वरी भक्त मंडल की ओर से श्री कृष्णा गौशाला, होसूर बंडे परिसर में आयोजित नौ दिवसीय श्रीराम कथा के तीसरे दिन श्रद्धा और भक्ति का वातावरण रहा। कथा वाचक संत किशोरचंद रामायणी ने भगवान श्रीराम के जीवन प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन करते हुए कहा कि श्रीराम का जीवन सत्य, मयार्दा, त्याग और कर्तव्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

संत रामायणी ने कहा कि भगवान श्रीराम ने विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म और सत्य का साथ नहीं छोड़ा। यही कारण है कि उनका जीवन आज भी समाज के लिए आदर्श और प्रेरणास्रोत बना हुआ है। कथा के दौरान राम जन्म, भगवान श्रीराम के बाल स्वरूप तथा उनके संस्कारों का भावपूर्ण चित्रण किया गया। उन्होंने कहा कि माता-पिता और गुरु के प्रति सम्मान, बड़ों का आदर तथा छोटों के प्रति स्नेह भारतीय संस्कृति की पहचान है। उन्होंने श्रद्धालुओं से भगवान श्रीराम के आदर्शों को केवल कथा तक सीमित न रखते हुए अपने दैनिक जीवन में उतारने का आह्वान किया।

श्री कृष्णा गौशाला के संचालक संत पुष्करदास ने कहा कि गोसेवा और रामकथा भारतीय संस्कृति एवं सनातन परंपरा के महत्वपूर्ण आधार हैं। रामकथा से मिलने वाली सीख को जीवन में अपनाने से परिवार और समाज में संस्कार, सद्भाव और धर्म की भावना मजबूत होती है। कथा के दौरान श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से भगवान श्रीराम के जयकारे लगाए। कार्यक्रम में महाप्रसादी के लाभार्थी मैसूरु निवासी पानीदेवी मोहनलाल बर्फा परिवार रहा।

महालक्ष्मीपुरम में राज्य स्तरीय कराटे स्पर्धा, 250 से अधिक बच्चों ने दिखाया दमखम

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु` 22 अगस्त 2026। महालक्ष्मीपुरम स्थित डॉ. राजकुमार ऑडिटोरियम में ओकिनावा ड्रैगन मार्शल आर्ट शॉटोकन के तत्वावधान में राज्य स्तरीय कराटे स्पर्धा का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 250 से अधिक बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी मार्शल आर्ट प्रतिभा और खेल कौशल का प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता के दौरान विभिन्न वर्गों में प्रतिभागियों ने अनुशासन, आत्मविश्वास और तकनीकी दक्षता के साथ मुकाबलों में हिस्सा लिया। आयोजन का उद्देश्य बच्चों एवं युवाओं में आत्मरक्षा, अनुशासन तथा खेल भावना को बढ़ावा देना रहा। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर आयोजकों की ओर से महेंद्र मुणोत का भी सम्मान किया गया।

आयोजकों ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से बच्चों को अपनी प्रतिभा निखारने के साथ-साथ आत्मविश्वास और अनुशासन विकसित करने का अवसर मिलता है। प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में बच्चों की भागीदारी ने कराटे के प्रति बढ़ती रुचि को भी दशार्या।

SUV में 9 करोड़ कैश! होसुर रोड पर आयकर विभाग की बड़ी कार्रवाई

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 22 अगस्त 2026। होसुर रोड पर आयकर विभाग ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक रवश से करीब 9 करोड़ रुपये की बेहिसाब नकदी जब्त की है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार वाहन में तमिलनाडु का एक ज्वैलर समेत दो लोग सवार थे और वे बेंगलुरु से होसुर की ओर जा रहे थे। नकदी के संबंध में संतोषजनक दस्तावेज और वैध स्रोत स्पष्ट नहीं किए जाने के बाद आयकर अधिकारियों ने रकम को अपने कब्जे में ले लिया। गुप्त सूचना पर रोका गया वाहन कार्रवाई बेंगलुरु के इलेक्ट्रॉनिक सिटी क्षेत्र में मंगलवार रात हुई। बताया गया कि आयकर विभाग को बड़ी मात्रा में नकदी के कथित अवैध परिवहन की सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर आयकर अधिकारियों ने स्थानीय पुलिस से संपर्क किया और संदिग्ध वाहन की तलाश शुरू की।

अधिकारियों के अनुसार, आयकर विभाग की यूनिट-22 के डिप्टी डायरेक्टर जगदीश को नकदी के परिवहन की जानकारी मिली थी। इसके बाद इलेक्ट्रॉनिक सिटी पुलिस थाने के नाइट पेट्रोलिंग स्टाफ को सूचना देकर वाहन की निगरानी शुरू की गई। मंगलवार रात करीब 10:30 बजे, इएळछ टोल पार करने

के बाद होसुर रोड पर एक सिग्नल के पास संदिग्ध रवश को रोक लिया गया। वाहन का नंबर ङछ 20 ळ 8629 बताया गया है। तलाशी में मिली भारी नकदी वाहन की तलाशी के दौरान अधिकारियों को बड़ी मात्रा में नकदी मिली। शुरूआती जांच में रकम करीब 9 करोड़ रुपये बताई गई। वाहन में सवार दोनों लोगों को पूछताछ के लिए इलेक्ट्रॉनिक सिटी पुलिस स्टेशन ले जाया गया।

आयकर विभाग अब नकदी के स्रोत, उसके संभावित उपयोग और बेंगलुरु से तमिलनाडु ले जाने के उद्देश्य की जांच कर रहा है। अधिकारियों के सामने यह पता लगाना प्रमुख है कि रकम किसी वैध कारोबारी लेनदेन से जुड़ी है या किसी अन्य वित्तीय गतिविधि से। ज्वैलरी कारोबार से जुड़े रिकॉर्ड खंगाले जाएंगे प्रारंभिक जानकारी में वाहन में सवार व्यक्ति को तमिलनाडु का ज्वैलर बताया जा रहा है। ऐसे में जांच का एक अहम पहलू यह भी है कि क्या जब्त नकदी ज्वैलरी कारोबार से संबंधित है।

आयकर अधिकारी कारोबारी रिकॉर्ड, बैंक लेनदेन, बिक्री-खरीद से जुड़े दस्तावेज और अन्य वित्तीय कागजात की जांच कर सकते हैं। यदि रकम का वैध स्रोत दस्तावेजों से साबित होता है तो उसी आधार पर आगे की कार्रवाई होगी। वहीं, संतोषजनक स्रोत नहीं मिलने पर आयकर कानून के तहत कार्रवाई की जा सकती है। नकदी के उद्देश्य पर भी जांच करीब 9 करोड़ रुपये नकद मिलने के बाद जांच एजेंसियां यह भी पता लगा रही हैं कि रकम का संबंध किसी अन्य वित्तीय गतिविधि से तो नहीं है। हालांकि, फिलहाल अधिकारियों ने जब्त नकदी को किसी विशेष अवैध गतिविधि से जोड़कर कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं दिया है। फिलहाल रकम आयकर विभाग के कब्जे में है और वाहन में सवार दोनों लोगों से पूछताछ तथा दस्तावेजों की जांच जारी है। जांच पूरी होने के बाद ही नकदी के वास्तविक स्रोत और उसके इस्तेमाल को लेकर स्थिति स्पष्ट होगी।

कांग्रेस पर बरसे नारायण स्वामी, लगाए भ्रष्टाचार के आरोप

भारतार्थ खबरBhaarataarth.com

बेंगलुरु` 22 अगस्त 2026। कर्नाटक विधान परिषद में विपक्ष के नेता चलवादी नारायण स्वामी ने कांग्रेस सरकार पर भ्रष्टाचार और प्रशासनिक लापरवाही के गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार कथित भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश लगाने में विफल रही है और अधिकारियों को भी मनमानी की छूट दी जा रही है। मल्लेश्वरम स्थित राज्य भाजपा कार्यालय जगन्नाथ भवन में मीडिया से बातचीत के दौरान नारायण स्वामी ने आरोप लगाया कि राज्य में भ्रष्टाचार का दायरा लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने वाल्मीकि निगम से जुड़े कथित अनियमितताओं से लेकर बेंगलुरु की सड़कों के गड्ढों की मरम्मत, कचरा प्रबंधन और अन्य सरकारी कार्यों में वित्तीय गड़बड़ी के आरोप लगाए।

नागेंद्र को लेकर सरकार पर निशाना नारायण स्वामी ने पूर्व मंत्री बी. नागेंद्र से जुड़े कथित भ्रष्टाचार मामले को लेकर भी राज्य सरकार पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि भाजपा इस मुद्दे को विधानमंडल में लगातार उठाती रही है और नागेंद्र के इस्तीफे की मांग पर पार्टी पीछे नहीं हटेगी। उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति को जमानत मिलना उसे भ्रष्टाचार के आरोपों से मुक्त नहीं करता। उनके अनुसार, मामले से जुड़े आरोपों पर विस्तृत चर्चा और जांच जरूरी है। उन्होंने सरकार से सवाल किया कि यदि नागेंद्र पहले मंत्री पद से इस्तीफा दे चुके थे और जेल भी जा चुके हैं, तो उन्हें दोबारा मंत्री पद क्यों दिया गया। दलित सुरक्षा को लेकर भी उठाए सवाल

विपक्ष के नेता ने राज्य में दलितों के खिलाफ कथित अत्याचार और जातिगत दुर्व्यवहार के मामलों को लेकर भी सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ मामलों में पुलिस और गृह विभाग की कार्रवाई पर्याप्त नहीं है। नारायण स्वामी ने देवदुर्ग क्षेत्र में एक दलित व्यक्ति के साथ कथित मारपीट और गंभीर अपराध के आरोपों का उल्लेख करते हुए सरकार से प्रभावी कार्रवाई की मांग की। हालांकि, इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि इस बयान के आधार पर नहीं की गई है। सरकार की नीतियों पर भी सवाल

उन्होंने राज्य में सूखे की स्थिति को लेकर भाजपा द्वारा अध्ययन कर रिपोर्ट सौंपे जाने का दावा किया और कहा कि सरकार को किसानों की समस्याओं पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। उन्होंने बिदादी टाउनशिप से जुड़ी प्रस्तावित योजनाओं को लेकर भी सरकार की नीयत पर सवाल उठाए तथा किसानों के हितों की रक्षा की मांग की। नारायण स्वामी ने कहा कि सरकार को राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से आगे बढ़कर भ्रष्टाचार के आरोपों की निष्पक्ष जांच और जनता से जुड़े मुद्दों पर ठोस कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होंने दोहराया कि नागेंद्र से जुड़े मामले पर सरकार जब तक स्पष्ट जवाब नहीं देती और जिम्मेदारी तय नहीं होती, तब तक विपक्ष इस मुद्दे को उठाता रहेगा।

प्रज्वल रेवन्ना केस: मुख्य गवाह को धमकी, मांगी सुरक्षा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु` 22 अगस्त 2026। पूर्व सांसद प्रज्वल रेवन्ना से जुड़े दुष्कर्म मामले में एक मुख्य गवाह ने गवाही के बाद कथित रूप से धमकी भरे फोन आने की शिकायत करते हुए खुद और अपने बेटे की सुरक्षा की मांग की है। गवाह की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए अदालत ने कर्नाटक अपराध जांच विभाग (CID) के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक को मामले की जांच कर अगली सुनवाई में रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है।

अदालत में सुनवाई के दौरान हासन जिले के होलेनरसीपुर की 43 वर्षीय महिला ने बताया कि मुख्य गवाही पूरी होने के बाद उन्हें कई बार धमकी भरे फोन कॉल प्राप्त हुए। महिला सामाजिक कार्य से जुड़ी हैं। उन्होंने आशंका जताई कि उन्हें या उनके बेटे

को नुकसान पहुंचाया जा सकता है। गवाह ने जताई सुरक्षा की चिंता गवाह ने अदालत के समक्ष कहा कि यदि उनके या उनके बेटे के साथ कोई अप्रिय घटना होती है तो इसके लिए आरोपी पक्ष को जिम्मेदार माना जाए। शिकायत के बाद अदालत ने संबंधित अधिकारियों को नियमों के तहत गवाह की सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

अदालत ने उक्ऌके अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक को धमकी भरे कॉल की जांच करने और अगली सुनवाई के दौरान जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा है। मामले में धमकी देने वाले व्यक्ति या व्यक्तियों की पहचान और उनके मकसद की जांच की जा रही है।

जेल में प्रज्वल रेवन्ना की कोठरी से सामान बरामद इस मामले से जुड़े घटनाक्रम में हाल ही में सेंट्रल क्राइम ब्रांच (CCB) ने बेंगलुरु की सेंट्रल जेल के हाई-सिक्योरिटी बैरक में प्रज्वल रेवन्ना की कोठरी से कथित तौर पर मोबाइल फोन, चार्जर, पेन ड्राइव और स्क्रिबलिंग पैड बरामद किया था।

इस बरामदगी को लेकर परप्पना अग्रहारा पुलिस थाने में प्रज्वल रेवन्ना और उनके सेलमेट के खिलाफ मामला दर्ज किए जाने की जानकारी सामने आई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। प्रज्वल रेवन्ना मामले की पृष्ठभूमि

प्रज्वल रेवन्ना जनता दल (सेक्युलर) के पूर्व सांसद हैं और पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा के पोते हैं। उनके खिलाफ यौन अपराधों से जुड़े मामले में वर्ष 2024 में गिरफ्तारी हुई थी। प्रस्तुत जानकारी के अनुसार, 2 अगस्त 2025 को बेंगलुरु की विशेष अदालत ने एक दुष्कर्म मामले में प्रज्वल रेवन्ना को दोषी ठहराते हुए 48 वर्षीय घरेलू सहायिका के साथ दुष्कर्म के मामले में आजीवन सश्रम कारावास की सजा सुनाई थी। गवाह को मिली कथित धमकियों और उनके स्रोत की जांच अभी जारी है। धमकी के आरोपों पर अंतिम निष्कर्ष जांच और न्यायिक प्रक्रिया के बाद ही सामने आएगा।

शिव-सती से अर्धनारीश्वर तक—प्रेम, त्याग और अहंकार के बीच संतुलन का शाश्वत संदेश

भारतार्थ खबर (श्री राम सेनी गोपालगंज आजमगढ़ उत्तरप्रदेश)

कैलाश को केवल एक पर्वत मानना भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के उस व्यापक अर्थ को सीमित कर देना है, जिसमें कैलाश भगवान शिव की साधना, वैराग्य, मौन और आत्मचिंतन का प्रतीक माना जाता है। बर्फ से ढका वह कैलाश, जहां शिव समाधिस्थ योगी के रूप में कल्पित किए जाते हैं, भारतीय चेतना में केवल भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि उस आंतरिक अवस्था का प्रतीक है जहां मनुष्य संसार के शोर से दूर होकर स्वयं के भीतर उतरता है। इसी मौन कैलाश में जब सती के प्रेम का प्रवेश होता है, तो भारतीय पुराण परंपरा की एक ऐसी कथा सामने आती है, जिसे केवल प्रेमकथा कह देना उसके व्यापक दार्शनिक अर्थ को छोटा कर देना होगा। शिव

और सती की कथा प्रेम, समर्पण, अहंकार, आत्मसम्मान, वियोग, पुनर्जन्म और अंततः चेतना तथा शक्ति के मिलन की कथा है।

इस कथा का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि शिव और शक्ति एक-दूसरे के पूरक हैं। भारतीय दर्शन में शक्ति को सृजन और ऊर्जा का आधार माना गया है, जबकि शिव को चेतना और परम तत्व का प्रतीक माना जाता है। इसी विचार को आगे चलकर अर्धनारीश्वर के स्वरूप में अभिव्यक्ति मिलती है। राजमहल से कैलाश तक की यात्रा सती का जन्म प्रजापति दक्ष के घर हुआ। दक्ष राजसी वैभव, सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यवस्था के प्रतिनिधि माने जाते हैं। इसके विपरीत शिव का स्वरूप पूरी तरह अलग दिखाई देता है–भस्म से विभूषित शरीर, जटाएं, सर्पों के आभूषण, कैलाश का एकांत और सांसारिक वैभव से दूरी।

बाहरी दृष्टि से देखें तो दोनों संसारों में बहुत बड़ा अंतर था। एक ओर राजमहल था और दूसरी ओर कैलाश का वैराग्य। लेकिन सती ने शिव को उनके बाहरी रूप से नहीं परखा। उन्होंने उस चेतना को पहचाना, जिसे वे सत्य मानती थीं। यही इस कथा का पहला महत्वपूर्ण संदेश है– किसी व्यक्ति का मूल्य केवल उसके बाहरी स्वरूप, संपत्ति, पद या सामाजिक प्रतिष्ठा से तय नहीं किया जा सकता। शिव-सती की कथा इस प्रश्न का उत्तर हमारे सामने रखती है।

प्रेम की पहली कसौटी–स्वीकार

सती का शिव के प्रति प्रेम किसी सुविधा पर आधारित नहीं था। उन्होंने शिव को बदलने की कोशिश नहीं की। उन्होंने यह नहीं कहा कि शिव अपना वैराग्य छोड़ें, राजसी जीवन अपनाएं या समाज के बनाए मानकों के अनुसार स्वयं को बदलें। उन्होंने शिव को उसी रूप में स्वीकार किया, जिस रूप में वे थे। यही सच्चे प्रेम की सबसे कठिन कसौटी है। प्रेम केवल किसी की सुंदरता, सफलता या सुविधा से आकर्षित होना नहीं है। प्रेम तब गहरा होता है जब व्यक्ति दूसरे के व्यक्तित्व, विचार और सत्य को समझने तथा स्वीकार करने का प्रयास करता है। शिव के शरीर पर लगी भस्म भी इस कथा में गहरा प्रतीक बन जाती है। भस्म मनुष्य को जीवन की नश्वरता का स्मरण कराती है। संसार में पद, धन, सौंदर्य और प्रतिष्ठा स्थायी नहीं हैं। अंततः सब कुछ परिवर्तनशील है। इसलिए शिव का वैराग्य संसार से घृणा नहीं, बल्कि उसके मोह से ऊपर उठने का प्रतीक माना जा सकता है। जब प्रेम के सामने अहंकार खड़ा हो जाए शिव और सती के संबंध के सामने सबसे बड़ी चुनौती प्रेम की कमी नहीं, बल्कि अहंकार था। दक्ष का शिव के प्रति विरोध इस कथा का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पक्ष बन जाता है। दक्ष के लिए शिव सामाजिक मयार्दाओं और राजसी प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं थे।

बदलते मौसम में बढ़ा फ्लू का खतरा, H1N1 के लक्षण सामान्य जुकाम से मिलते-जुलते

भारतार्थ खबर संवाददाता अशोक कुमार सिंह Bhaarataarth.com

नई दिल्ली 22 अगस्त 2026। बदलते मौसम और वातावरण में नमी के बीच सर्दी-जुकाम तथा फ्लू जैसे संक्रमण को लेकर सतर्क रहने की जरूरत है। एच1एन1 इन्फ्लुएंजा, जिसे आम बोलचाल में स्वाइन फ्लू कहा जाता है, के कई लक्षण सामान्य वायरल संक्रमण और जुकाम से मिलते-जुलते हो सकते हैं। ऐसे में लगातार या गंभीर लक्षणों को सामान्य जुकाम मानकर नजरअंदाज करने के बजाय चिकित्सकीय सलाह लेना उचित है।

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (NCDC) की ओर से Seasonal Ibfluenz (H1N1) को लेकर तकनीकी दिशानिर्देश और जन-जागरूकता संबंधी सामग्री उपलब्ध कराई गई है। NCDC की वेबसाइट पर वर्ष 2026 के लिए इन्फ्लुएंजा वैक्सीन की संरचना सहित H1N1 से संबंधित जानकारी और दिशानिर्देश उपलब्ध हैं।

सामान्य जुकाम और H1N1 में क्या अंतर है? एच1एन1 संक्रमण में बुखार, खांसी, गले में खराश, शरीर में दर्द, सिरदर्द, थकान और कमजोरी जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। सामान्य जुकाम में भी नाक बहना, छींक, गले में खराश और हल्की खांसी जैसी समस्याएं होती हैं। दोनों के लक्षणों में समानता होने के कारण केवल शुरूआती लक्षणों के आधार पर संक्रमण की पहचान करना हमेशा आसान नहीं होता।

तेज या लगातार बुखार, लगातार खांसी, अत्यधिक कमजोरी अथवा सांस लेने में परेशानी जैसे लक्षण दिखाई देने पर चिकित्सकीय सलाह लेना जरूरी है। बच्चों, बुजुर्गों और पहले से गंभीर बीमारी से जूझ रहे लोगों में फ्लू जैसे लक्षणों को लेकर विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। दिल्ली समेत विभिन्न राज्यों में दर्ज हुए मामले

NCDC के उपलब्ध आंकड़ों में दिल्ली सहित विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में Seasonal Ibfluenz A (H1N1) के मामले दर्ज किए गए हैं। NCDC के 30 जून 2025 तक के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली में वर्ष 2025 के दौरान 181 मामले दर्ज किए गए थे। हालांकि अगस्त 2026 की वर्तमान स्थिति के लिए ठउऊ के उपलब्ध पेज पर राज्यवार नए मामलों का समान प्रारूप में आंकड़ा दिखाई नहीं देता। इसलिए उपलब्ध आधिकारिक जानकारी के आधार पर देशभर में ऌ1ठ1 मामलों में तेज बढ़ोतरी का दावा करना उचित नहीं होगा।

बचाव के लिए सावधानी जरूरी फ्लू जैसे संक्रमण से बचाव के लिए भीड़भाड़ वाली जगहों पर सावधानी बरतना, खांसते या छींकते समय मुंह और नाक ढंकना, हाथों की स्वच्छता बनाए रखना तथा बीमार होने पर अन्य लोगों से पर्याप्त दूरी रखना उपयोगी उपाय हैं। ठउऊ की ओर से ऌ1ठ1 के संबंध में मास्क, होम केयर, रोगी वर्गीकरण और क्लिनिकल प्रोटोकॉल से संबंधित दिशानिर्देश भी उपलब्ध कराए गए हैं। लगातार बने रहने वाले या गंभीर लक्षणों की स्थिति में स्वयं दवा लेने के बजाय चिकित्सक से परामर्श लेना बेहतर है।

पाकिस्तानी नेटवर्क से कथित संपर्क, AC टेक्नीशियन गिरफ्तार

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

डोड्डाबल्लापुर 22 अगस्त 2026। कर्नाटक के डोड्डाबल्लापुर में पुलिस ने 28 वर्षीय अउ रिपेयर टेक्नीशियन सैयद अबू बकर को कथित तौर पर पाकिस्तान स्थित एक गैंग के संपर्क में रहने के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, आरोपी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम के माध्यम से पाकिस्तान से जुड़े एक नेटवर्क के संपर्क में था और कथित तौर पर उसके कहने पर केरल तथा दिल्ली गया था। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तारी काउंटर इंटेलिजेंस सेल और सेंट्रल इंटेलिजेंस ब्यूरो से मिली जानकारी के आधार पर की गई। आरोपी डोड्डाबल्लापुर के इस्लामपुर का निवासी बताया गया है। दो साल से सोशल मीडिया संपर्क का दावा

जांच एजेंसियों के अनुसार, अबू बकर पिछले करीब दो वर्षों से Hammaadmemon नामक इंस्टाग्राम अकाउंट के संपर्क में था। पुलिस का दावा है कि यह अकाउंट पाकिस्तान में सक्रिय बताए जाने वाले शहजाद भट्टी नेटवर्क से जुड़ा है। पुलिस के मुताबिक, आरोपी ने कथित तौर पर अपने आधार कार्ड से संबंधित जानकारी भी साझा की थी। सोशल मीडिया गतिविधियों की निगरानी के दौरान वह जांच एजेंसियों के संदेह के घेरे में आया। अधिकारियों ने दावा किया कि वह पाकिस्तान से जुड़े कथित गैंगस्टरों की सोशल मीडिया सामग्री देखता और उसे पसंद करता था। केरल और दिल्ली जाने की भी जांच

पुलिस के अनुसार, आरोपी अउ रिपेयर टेक्नीशियन के रूप में काम करता था और बेंगलुरु की एक मस्जिद में पढ़ाने का काम भी करता था। जांच में उसके कथित रूप से गैंग के सदस्यों के निर्देश पर केरल और दिल्ली जाने की जानकारी सामने आने का दावा किया गया है। पुलिस ने अबू बकर को डोड्डाबल्लापुर के इस्लामपुर स्थित उसके घर से गिरफ्तार कर पूछताछ के लिए पुलिस हिरासत में लिया है। मामले में उसके संपर्कों और गतिविधियों की जांच जारी है।

मोबाइल फोन से हथियारों की तस्वीरें मिलने का दावा जांच के दौरान आरोपी के मोबाइल फोन से बंदूकों और पिस्तौल की तस्वीरें मिलने की बात भी पुलिस ने कही है। अधिकारियों के अनुसार, आरोपी की हथियारों में रुचि होने की भी जांच की जा रही है। पुलिस ने उसका मोबाइल फोन जब्त कर लिया है।

रिपोर्ट के अनुसार, आरोपी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (इठर) की धारा 113(3) और 197(2) के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस अब कथित सोशल मीडिया संपर्क, यात्रा और अन्य गतिविधियों के बीच संबंधों की जांच कर रही है। महत्वपूर्ण: आरोपी पर लगाए गए आरोप जांच का विषय हैं। अदालत में दोष सिद्ध होने तक आरोपी को कानून के अनुसार निर्दोष माना जाता है।

पहाड़ के स्थायी समाधान पर शाह की बड़ी बैठक

भारतार्थ
खबरBhaarataarth.com

सिलीगुड़ी 22 अगस्त 2026।पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग, कर्सियांग और कालिम्पोंग समेत पहाड़ी क्षेत्रों की लंबे समय से चली आ रही राजनीतिक एवं प्रशासनिक समस्याओं के स्थायी समाधान को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में शनिवार को सुकना में महत्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक में केंद्र और राज्य सरकार के प्रतिनिधियों के साथ गोरखा राजनीति से जुड़े प्रमुख नेताओं ने हिस्सा लिया। बैठक का मुख्य केंद्र संवैधानिक दायरे में पहाड़ी क्षेत्रों के लिए स्थायी राजनीतिक समाधान तलाशना रहा। दार्जिलिंग और आसपास के इलाकों में अलग गोरखालैंड राज्य की मांग को लेकर दशकों से राजनीतिक आंदोलन होते रहे हैं। पूर्व में दार्जिलिंग गोरखा हिल काउंसिल और गोरखालैंड टेरिटोरियल एडमिनिस्ट्रेशन (जीटीए) जैसे व्यवस्थागत प्रयास किए गए, लेकिन क्षेत्र की राजनीतिक और प्रशासनिक समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं हो सका। गोरखा नेताओं ने रखे क्षेत्रीय मुद्दे सुकना में हुई बैठक में पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी, दार्जिलिंग के लोकसभा सांसद राजू बिष्ट, राज्य के वरिष्ठ अधिकारी तथा पहाड़ी क्षेत्रों के विधायक एवं अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। गोरखा जनमुक्ति मोर्चा (जीजेएम) के अध्यक्ष बिमल गुरुंग, महासचिव रोशन गिरी और गोरखा नेशनल लिबरेशन फ्रंट (जीएनएलएफ) के अध्यक्ष मान घीसिंग समेत कई प्रमुख गोरखा नेता भी बैठक में शामिल हुए।

दार्जिलिंग के सांसद राजू बिष्ट के अनुसार, बैठक में गोरखा नेताओं ने अपने मुद्दे रचनात्मक ढंग से रखे। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने भी संबंधित विषयों पर सरकार का पक्ष और प्रतिबद्धता सामने रखी। स्थायी समाधान के लिए समिति का गठन बैठक के बाद अमित शाह ने पहाड़ी क्षेत्रों से जुड़े मुद्दों के स्थायी समाधान की दिशा में उच्चस्तरीय समिति गठित करने की घोषणा की। समिति की अध्यक्षता पूर्व आईपीएस अधिकारी और मध्यस्थ पंकज कुमार सिंह करेंगे। समिति केंद्र को अपनी रिपोर्ट सौंपेगी और क्षेत्र से जुड़े विभिन्न मुद्दों के समाधान के विकल्पों पर काम करेगी। बैठक में इस बात पर भी जोर दिया गया कि दार्जिलिंग पहाड़ियों के साथ-साथ तराई और डुआर्स क्षेत्र से जुड़े विषयों का समाधान संवैधानिक व्यवस्था के भीतर तलाशा जाना चाहिए।

रोजगार, चाय बागान और जीटीए के मुद्दे भी अहम पहाड़ी क्षेत्रों में राजनीतिक समाधान के साथ रोजगार, शिक्षकों की नियुक्ति, चाय बागानों की स्थिति, परिवहन व्यवस्था तथा गोरखालैंड क्षेत्रीय प्रशासन से जुड़े विषय भी महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। इन मुद्दों का सीधा संबंध क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक विकास से है। गोरखा जनमुक्ति मोर्चा लंबे समय से केंद्र और राज्य सरकार के साथ बातचीत के माध्यम से स्थायी राजनीतिक समाधान की मांग करता रहा है। ऐसे में अमित शाह की अध्यक्षता में हुई यह बैठक पहाड़ की राजनीति में आगे की दिशा तय करने के लिहाज से महत्वपूर्ण मानी जा रही है। बैठक के बाद जीजेएम महासचिव रोशन गिरी ने इसे संतोषजनक बताया, जबकि केंद्र की ओर से गठित समिति को अब पहाड़ी क्षेत्रों की विभिन्न मांगों और समस्याओं पर आगे की प्रक्रिया तय करनी होगी।

841 फर्जी नियुक्तियां, 160 करोड़ के शालार्थ घोटाले में शिकंजा

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नासिक, 21 अगस्त 2026। महाराष्ट्र के बहुचर्चित शालार्थ आईडी फर्जीवाड़ा मामले में नासिक शहर क्राइम ब्रांच ने जांच तेज कर दी है। करीब 160 करोड़ रुपये के कथित घोटाले में शिक्षा विभाग से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलने पर पुलिस ने नासिक, धुलिया, नंदुरबार और जलगांव के शिक्षा अधिकारियों को क्राइम ब्रांच कार्यालय तलब किया। अधिकारियों को संदिग्ध शिक्षकों एवं कर्मचारियों से जुड़े जरूरी दस्तावेज तत्काल उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं। पुलिस ने संबंधित शिक्षा अधिकारियों को औपचारिक नोटिस जारी कर नियुक्ति, मान्यता, शालार्थ आईडी, वेतन और एरियर से जुड़े अभिलेख सौंपने को कहा है। मार्च 2026 में नासिक रोड पुलिस थाने में इस मामले को लेकर प्राथमिकी दर्ज की गई थी। पुलिस का आरोप है कि कथित मिलीभगत के जरिए शासन को 160 करोड़ रुपये से अधिक की आर्थिक क्षति पहुंचाई गई। 841 नियुक्तियों पर जांच का फोकस पुलिस जांच में सामने आया है कि नासिक शिक्षा उपसंचालक कार्यालय के अधिकार क्षेत्र वाले चार जिलों में 841 शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों की बिना व्यक्तिगत मान्यता और शालार्थ प्रस्ताव के पिछली तारीखों में कथित फर्जी नियुक्तियां दर्शाई गईं। इन नियुक्तियों के आधार पर शासन से वेतन और एरियर हासिल किए जाने का आरोप है।

पूरे मामले में अब तक करीब 1200 संदिग्ध सामने आने की बात कही गई है। पुलिस द्वारा जरूरी दस्तावेज मांगे जाने के बावजूद शिक्षा विभाग से अपेक्षित जानकारी नहीं मिलने के कारण जांच प्रभावित हो रही थी। इसके बाद क्राइम ब्रांच ने शिक्षा अधिकारियों की बैठक लेकर उन्हें सभी संबंधित दस्तावेज तत्काल जांच एजेंसी को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। 15 संदिग्धों ने हाईकोर्ट का रुख किया मामले में 15 संदिग्धों ने नासिक रोड अदालत में अग्रिम जमानत के लिए याचिका दायर की थी, जिसे अदालत ने खारिज कर दिया। इसके बाद संबंधित संदिग्धों ने मुंबई हाईकोर्ट का रुख किया है। इनमें भाऊसाहेब चव्हाण, मीनाक्षी गिरी, प्रदीप शिंगणे, अतुल पवार, राहुल पवार, उमेश पवार, मनीष कदम, किरण कुवर, प्रवीण अहिरे, भास्कर पाटील, देविदास महाजन, अविनाश पाटिल, मनोज पाटिल और शरद शिंदे शामिल हैं।

मुख्य आरोपी अस्पताल में भर्ती मामले में शेदुनी एजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष संजय गरुड़ को नासिक क्राइम ब्रांच ने 27 जुलाई की रात सोलापुर जिले के एक फार्म हाउस से गिरफ्तार किया था। अदालत द्वारा पुलिस हिरासत दिए जाने के बाद तबीयत बिगड़ने पर उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। उपचार जारी रहने के कारण पुलिस उनसे विस्तृत पूछताछ नहीं कर सकी है। पुलिस कमिश्नर संदीप कर्णिक के मार्गदर्शन में सहायक पुलिस आयुक्त संदीप मिटके मामले की जांच कर रहे हैं। क्राइम ब्रांच अब नियुक्तियों से लेकर शालार्थ आईडी और वेतन भुगतान तक की पूरी प्रक्रिया की जांच कर रही है।

वंदे मातरम विवाद में शर्मिला टैगोर पर भाजपा का पलटवार

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

कोलकाता, 22 अगस्त 2026। वंदे मातरम के पूरे गीत को लेकर कांग्रेस और भाजपा के बीच जारी सियासी बहस अब अभिनेत्री शर्मिला टैगोर तक पहुंच गई है। पश्चिम बंगाल भाजपा अध्यक्ष शमीक भट्टाचार्य ने शर्मिला टैगोर के बयान पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए उनके परिवार

और उनके नाती तैमूर अली खान के नाम का उल्लेख किया। शर्मिला टैगोर ने हाल में कहा था कि धार्मिक विविधता वाले देश में वंदे मातरम के पूरे गीत को लेकर कुछ समुदायों को आपत्ति हो सकती है। उन्होंने गीत के शुरूआती दो अंतरों को मातृभूमि के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना से जुड़ा बताते हुए कहा था कि इन्हें व्यापक रूप से स्वीकार किया जा सकता है। शमीक भट्टाचार्य ने साधा निशाना

शमीक भट्टाचार्य ने कहा कि शर्मिला टैगोर अपनी निजी राय रखने के लिए स्वतंत्र हैं, लेकिन उन्हें इतिहास और अपने परिवार के संदर्भ में भी बात करनी चाहिए। उन्होंने तैमूर अली खान के नाम का हवाला देते हुए शर्मिला टैगोर पर निशाना साधा।

भाजपा नेता ने कहा कि जिस ऐतिहासिक तैमूर के भारत पर आक्रमण और हिंसा से जुड़े प्रसंग इतिहास में दर्ज हैं, उसी नाम का इस्तेमाल उनके नाती के नाम के रूप में किया गया है। उन्होंने इसी संदर्भ में टिप्पणी करते हुए कहा कि शर्मिला टैगोर को वंदे मातरम पर कम बोलना चाहिए। पूरे गीत को लेकर भाजपा-कांग्रेस आमने-सामने वंदे मातरम के पूरे गीत को लेकर भाजपा और कांग्रेस के बीच राजनीतिक विवाद लगातार तेज हो रहा है। भाजपा का तर्क है कि राष्ट्रगीत के केवल शुरूआती दो अंतरों तक सीमित रहने के बजाय पूरा गीत गाया जाना चाहिए। इसी मुद्दे पर पार्टी की ओर से नए कानून की मांग की बात भी सामने आई है।

वहीं, शर्मिला टैगोर का कहना है कि देश में ऐसे लोग भी हैं जो एकेश्वरवाद में विश्वास करते हैं और देवी-देवताओं की पूजा नहीं करते। ऐसे लोगों के लिए गीत की कुछ पंक्तियां असहज हो सकती हैं। उनके मुताबिक शुरूआती दो अंतरे मातृभूमि के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना व्यक्त करते हैं। कंगना रनौत भी कर चुकी हैं प्रतिक्रिया शर्मिला टैगोर के बयान के बाद भाजपा नेताओं की प्रतिक्रियाएं लगातार सामने आ रही हैं। इससे पहले भाजपा सांसद एवं अभिनेत्री कंगना रनौत ने भी उनके बयान पर निशाना साधा था। अब शमीक भट्टाचार्य की टिप्पणी से वंदे मातरम को लेकर चल रही राजनीतिक बहस और तीखी हो गई है। तैमूर अली खान के नाम को लेकर भी उनके जन्म के बाद सोशल मीडिया पर काफी बहस हुई थी।

छात्रों पर अत्याचार बर्दाश्त नहीं करेगी भाजपा: चंपई सोरेन

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

रांची 22 अगस्त 2026। झारखंड में जेपीएससी और जेएसएससी भर्ती परीक्षाओं में कथित गड़बड़ियों को लेकर चल रहे छात्र आंदोलन के दौरान हुए विवाद को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री एवं भाजपा नेता चंपई सोरेन ने राज्य सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने छात्रों पर कथित पुलिस लाठीचार्ज और मारपीट की घटनाओं की आलोचना करते हुए कहा कि भाजपा विपक्ष की भूमिका में छात्रों के साथ खड़ी है और सरकार की कथित तानाशाही का विरोध करेगी। चंपई सोरेन ने कहा कि छात्रों के साथ किसी भी प्रकार का अन्याय हुआ तो भाजपा चुप नहीं बैठेगी। उन्होंने सरकार को संयम बरतने की सलाह

देते हुए चेतावनी दी कि यदि छात्रों के खिलाफ दमनात्मक कार्रवाई जारी रही तो विरोध-प्रदर्शन और तेज हो सकते हैं। तीन जिलों में हुआ विवाद

जेपीएससी और जेएसएससी की भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं को लेकर शुक्रवार को छात्रों का आंदोलन रांची, गिरिडीह और हजारीबाग में टकराव में बदल गया। जानकारी के अनुसार, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का पुतला दहन करने पहुंचे छात्रों और झारखंड मुक्ति मोर्चा समर्थकों के बीच झड़प हुई। घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए चंपई सोरेन ने कहा कि छात्रों का आंदोलन रोजगार और भर्ती प्रक्रिया से जुड़े मुद्दों को लेकर है और इसे राजनीतिक संघर्ष के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। छात्रों के अनुशासन की सराहना

भाजपा नेता ने दावा किया कि प्रदर्शन कर रहे छात्र अनुशासित रहे और उन्होंने उकसावे के बावजूद जवाबी कार्रवाई नहीं की। उन्होंने आरोप लगाया कि छात्रों के विरोध को दबाने के लिए लोगों को झंडों के साथ लाया गया और उनके साथ मारपीट की गई। चंपई सोरेन ने कहा कि छात्र अपनी मांगों को लेकर शांतिपूर्ण तरीके से संघर्ष कर रहे हैं। उनके अनुसार, यह आंदोलन किसी राजनीतिक दल के लिए नहीं, बल्कि रोजगार और युवाओं के भविष्य से जुड़े सवालों के लिए है। सरकार पर लगाए गंभीर आरोप

पूर्व मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार पर भर्ती प्रक्रिया को लेकर छात्रों के साथ छल करने का आरोप लगाया। उन्होंने सवाल उठाया कि जेपीएससी से जुड़ी प्रक्रिया को रद्द करने की आवश्यकता क्यों पड़ी और सरकार को भर्ती परीक्षाओं से जुड़े विवादों का पारदर्शी तरीके से समाधान करना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य में सरकार की कार्यशैली लगातार दमनकारी होती जा रही है। साथ ही कहा कि यदि छात्रों पर अत्याचार जारी रहा तो भाजपा राज्यभर में विरोध दर्ज कराएगी। हालांकि, चंपई सोरेन द्वारा लगाए गए आरोप राजनीतिक बयान का हिस्सा हैं। भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं तथा शुक्रवार की झड़पों से जुड़े तथ्यों की स्वतंत्र पुष्टि संबंधित जांच एवं आधिकारिक रिपोर्टों से ही होगी।

नक्सलवाद पर निर्णायक वार, बस्तर में विकास की नई रफ्तार

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

रायपुर, 22 अगस्त 2026 छत्तीसगढ़ के बस्तर में नक्सलवाद के खिलाफ मिली निर्णायक सफलता के बाद अब विकास की रफ्तार तेज हो गई है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि कभी नक्सलवाद से प्रभावित रहे बस्तर में अब शांति, विश्वास और विकास का नया दौर शुरू हुआ है। सरकार की प्राथमिकता सुरक्षा के साथ सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, रोजगार और आजीविका के अवसरों का विस्तार करना है। मुख्यमंत्री साय ने यह बात मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में पत्र सूचना कार्यालय, चेन्नई के निदेशक पी. अरुण कुमार के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ प्रवास पर आए चेन्नई के पत्रकारों के दल से चर्चा के दौरान कही। इस दौरान उन्होंने प्रदेश के बदलते विकास परिदृश्य, बस्तर में नक्सलवाद के बाद तेज हुई विकास गतिविधियों, औद्योगिक नीति, निवेश, रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। नक्सलवाद से प्रभावित बस्तर में पहुंच रही सुविधाएं मुख्यमंत्री ने कहा कि करीब चार दशकों तक नक्सलवाद ने बस्तर के विकास को गंभीर रूप से प्रभावित किया। दुर्गम क्षेत्रों में सड़क, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य और संचार जैसी बुनियादी सुविधाएं पहुंचाना चुनौतीपूर्ण रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में केंद्र एवं राज्य सरकार के समन्वित प्रयासों से नक्सलवाद के खिलाफ महत्वपूर्ण सफलता मिली है।

उन्होंने कहा कि सुरक्षा बलों के साहस और स्थानीय लोगों के बढ़ते विश्वास से बस्तर अब तेजी से शांति और विकास की ओर बढ़ रहा है। जिन क्षेत्रों में कभी शासन की पहुंच कठिन थी, वहां अब विकास योजनाएं पहुंच रही हैं। नियद नेल्लानार से

गांवों में बढ़ी सुविधाएं मुख्यमंत्री ने बताया कि सुरक्षा कैंपों के आसपास के गांवों में नियद नेल्लानार योजना के माध्यम से विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं और बुनियादी सुविधाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। सड़क और मोबाइल कनेक्टिविटी के विस्तार के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, बिजली, राशन, बैंकिंग और आजीविका की सुविधाओं में भी वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य केवल नक्सलवाद का अंत करना नहीं, बल्कि बस्तर में विकास और समृद्धि की ऐसी मजबूत नींव तैयार करना है, जिससे आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित और बेहतर हो सके। पर्यटन और स्थानीय रोजगार पर जोर

मुख्यमंत्री ने बस्तर की प्राकृतिक सुंदरता, जलप्रपातों, वन संपदा, जनजातीय संस्कृति, कला और परंपराओं को पर्यटन से जोड़ने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि शांति स्थापित होने के साथ पर्यटन और स्थानीय उद्यमिता के नए अवसर पैदा हो रहे हैं। सरकार बस्तर की विशिष्ट पहचान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने तथा स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार और स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है। निवेश के लिए नए क्षेत्रों पर फोकस

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ खनिज, वन और कृषि संपदा के साथ ऊर्जा के क्षेत्र में भी मजबूत स्थिति रखता है। नई औद्योगिक विकास नीति 2024-30 में रोजगार सृजन, स्थानीय संसाधनों के मूल्य संवर्धन और नए एवं उभरते क्षेत्रों को प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने कहा कि राज्य अब परंपरागत उद्योगों तक सीमित नहीं है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा सेंटर, इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग, सेमीकंडक्टर, फार्मास्युटिकल, टेक्सटाइल और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में निवेश की संभावनाएं बढ़ रही हैं। सरकार का जोर ऐसे निवेश पर है, जिससे प्रदेश के युवाओं को बड़े पैमाने पर गुणवत्तापूर्ण रोजगार मिल सके। शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार

मुख्यमंत्री ने कहा कि रायपुर और नवा रायपुर देश के महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्रों के रूप में विकसित हो रहे हैं। उच्च एवं तकनीकी शिक्षा संस्थानों के विस्तार से प्रदेश के विद्यार्थियों को अपने राज्य में ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बेहतर अवसर मिल रहे हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में भी दूरस्थ एवं जनजातीय क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने, मेडिकल शिक्षा के विस्तार और आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं को मजबूत करने पर काम किया जा रहा है। सरकार का उद्देश्य विकास का लाभ प्रदेश के अंतिम छोर तक पहुंचाना है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री साय ने चेन्नई से आए पत्रकारों को छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध कोसा फैब के शॉल भेंट कर सम्मानित किया। पत्रकारों के दल ने मुख्यमंत्री को तमिलनाडु के प्रसिद्ध महाबलीपुरम मंदिर की प्रतिकृति स्मृति-चिह्न के रूप में भेंट की। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के सलाहकार आर. कृष्णा दास, जनसंपर्क आयुक्त रजत बंसल, मुख्यमंत्री के प्रेस अधिकारी आलोक सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सचिन कुमार का 21वां जन्मदिन धूमधाम से मनाया

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

मालीपुर पकड़ी, 21 अगस्त 2026। रविन्द्र मंडल के छोटे पुत्र सचिन कुमार का 21वां जन्मदिन शुक्रवार को उनके गृह निवास मालीपुर पकड़ी में हर्षोल्लास और पारिवारिक

माहौल में मनाया गया। जन्मदिन समारोह में परिजनों, रिश्तेदारों और मित्रों ने सचिन कुमार को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर उनकी माता पुनिता देवी, पिता रविन्द्र मंडल, बड़े अनुज संतोष कुमार एवं भावी सोनी कुमारी ने सचिन कुमार को आशीर्वाद प्रदान किया और ईश्वर से उनके सुखद, सफल एवं उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की।

समारोह में सचिन कुमार के मित्रगण भी शामिल हुए और उन्हें जन्मदिन की हार्दिक बधाइयां दीं। सचिन कुमार ने उपस्थित सभी श्रेष्ठजनों को प्रणाम कर आशीर्वाद लिया तथा मित्रों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस मंगल अवसर पर उपस्थित सभी लोगों का मुंह मीठा कराया गया।

प्रेषकः रतन बैठा, सीतामढ़ी

वंदे भारत अब माल ढोएगी! मुंबई-दिल्ली पार्सल सेवा की तैयारी

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

मुंबई, 22 अगस्त 2026। भारतीय रेलवे अब वंदे भारत की तेज रफ्तार का इस्तेमाल यात्रियों के साथ-साथ माल और पार्सल परिवहन के लिए करने की तैयारी में है। पश्चिम रेलवे ने वंदे भारत जैसी फ्रेट एटव के जरिए मुंबई-दिल्ली और सूरत-दिल्ली के बीच सुपरफास्ट पार्सल सेवा शुरू करने का प्रस्ताव तैयार किया है। हालांकि दोनों प्रस्तावों को अभी DFCCIL और रेलवे बोर्ड की मंजूरी का इंतजार है। 160 किमी प्रति घंटे तक होगी रफ्तार प्रस्तावित फ्रेट एटव को विशेष रूप से उच्च मूल्य और समय-संवेदनशील कार्गो की तेज ढुलाई के लिए तैयार किया गया है। इसकी परिचालन क्षमता 140 से 160 किलोमीटर प्रति घंटे तक बताई गई है। ट्रेन में पैलेट पर रखे कंटेनरों की ढुलाई के लिए विशेष व्यवस्था होगी।

फ्रेट एटव में करीब 1,800 मिमी चौड़े ऑटोमेटिक स्लाइडिंग दरवाजे और तापमान-संवेदनशील सामान के लिए रेफर कंटेनर लोड करने की सुविधा भी प्रस्तावित है। रेलवे

बोर्ड ने मई 2025 में सभी जोनल रेलवे को ऐसे रेक के संचालन के लिए संभावित मार्ग तलाशने के निर्देश दिए थे। भारतीय रेलवे में इस तरह के रेक का ट्रायल भी किया जा चुका है। जोगेश्वरी-दिल्ली के बीच साप्ताहिक सेवा का प्रस्ताव

पहला प्रस्ताव मुंबई के जोगेश्वरी (JOS) से आदर्श नगर दिल्ली (ANDI) के बीच साप्ताहिक सुपरफास्ट पार्सल सेवा का है। प्रस्तावित मार्ग साणंद-रेवाड़ी होते हुए डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर से जुड़ने की योजना है। यह प्रस्ताव मेसर्स हर्ष ट्रांसपोर्ट प्राइवेट लिमिटेड की ओर से दिया गया है, जो करीब 22 वर्षों से रेलवे के पार्सल कारोबार से जुड़ी बताई जाती है। हालांकि जोगेश्वरी स्टेशन फिलहाल पार्सल और माल यातायात के लिए बंद है। ऐसे में सेवा को बांद्रा टर्मिनस से शुरू करने के विकल्प पर भी विचार किया जा रहा है। सूरत-दिल्ली के बीच सप्ताह में तीन दिन

दूसरा प्रस्ताव सूरत-दिल्ली के बीच सप्ताह में तीन दिन फ्रेट एटव चलाने का है। यह सेवा भी खढढ-फ्लर मॉडल पर आधारित होगी। इसके लिए रेलवे बोर्ड ने प्रस्तावित समय-सारणी, रेक की आवश्यकता और संबंधित जोनल रेलवे की सहमति मांगी है।

मेंटेनेंस बना सबसे बड़ा सवाल

प्रस्तावित सेवाओं के सामने फिलहाल सबसे बड़ी चुनौती रेक के रखरखाव की है। मुंबई सेंट्रल में स्टेशन पुनर्विकास के कारण पिट लाइन उपलब्ध नहीं है, जबकि बांद्रा टर्मिनस पर वायर्ड पिट लाइन की सुविधा नहीं है। किले और वर्ली एटव कारशेड में 12 से 15 कोच तक के रेक के रखरखाव की क्षमता है, जबकि प्रस्तावित फ्रेट एटव रेक 16 कोच का होगा। पश्चिम रेलवे ने DFCCIL से दोनों प्रस्तावों की तकनीकी एवं परिचालन व्यवहार्यता की जांच कर उपयुक्त समय-सारणी उपलब्ध कराने को कहा है। रेलवे बोर्ड और संबंधित एजेंसियों से आवश्यक मंजूरी मिलने के बाद स्टॉक की स्वीकृति के आधार पर इन सेवाओं को अधिसूचित किया जा सकेगा। यदि योजना मंजूर होती है तो देश में तेज गति से पार्सल और उच्च मूल्य वाले माल की ढुलाई के लिए रेलवे को एक नया विकल्प मिल सकता है।

भू-अर्जन तेज, किशनगंज की विकास परियोजनाओं को मिलेगी रफ्तार

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

किशनगंज, 21 अगस्त 2026। जिले

में प्रस्तावित एवं निमार्णाधीन बड़ी विकास परियोजनाओं को गति देने के लिए जिला प्रशासन ने भू-अर्जन की प्रक्रिया तेज कर दी है। जिलाधिकारी नवीन कुमार ने शुक्रवार को विभिन्न महत्वपूर्ण परियोजनाओं के लिए चल रहे भू-अर्जन कार्यों की विस्तृत समीक्षा करते हुए अधिकारियों को लंबित मामलों का समयबद्ध निष्पादन करने के निर्देश दिए। समाहरणालय में आयोजित समीक्षा बैठक में किशनगंज-बहादुरगंज फोरलेन, गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेसवे, अररिया-गलगलिया नई ब्रॉडगेज रेल लाइन तथा किशनगंज हवाई अड्डे के रनवे विस्तार सहित कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं की प्रगति पर चर्चा हुई। डीएम ने कहा कि भू-अर्जन की प्रक्रिया में किसी भी स्तर पर अनावश्यक विलंब नहीं होना चाहिए, ताकि विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में बाधा न आए। बैठक में भारतमाला परियोजना के तहत किशनगंज-बहादुरगंज फोरलेन और गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेसवे के लिए भूमि अर्जन की स्थिति की समीक्षा की गई। इसके अलावा अररिया-गलगलिया नई ब्रॉडगेज रेल लाइन तथा बिहार राज्य उच्च पथ एसएच-99 से संबंधित भू-अर्जन की प्रगति पर भी अधिकारियों से जानकारी ली गई।

बहादुरगंज-टेढ़ागाछ सड़क के गलगलिया नई ब्रॉडगेज रेल लाइन तथा किशनगंज हवाई अड्डे के रनवे विस्तार सहित कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं की चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण, कटहलडांगी से धर्मकांटा चौक तक ठाकुरगंज बाईपास तथा एसएच-99 से एनएच-31 (कानकी) के बीच अभयपुर घाट पर उच्चस्तरीय एचएलआरसीसी पुल, पहुंच पथ, गाइड बांध एवं सुरक्षात्मक कार्यों के लिए आवश्यक भूमि अर्जन की भी बिंदुवार समीक्षा हुई। इसी क्रम में असुराघाट-निशंद्रा घाट के बीच कनकई नदी पर उच्चस्तरीय आरसीसी पुल एवं पहुंच पथ तथा महानंदा नदी पर किशनगंज-तैयबपुर-ठाकुरगंज-गलगलिया मार्ग पर उच्चस्तरीय आरसीसी पुल के लिए भूमि अर्जन की प्रगति भी जांची गई। किशनगंज हवाई अड्डे के रनवे विस्तार के लिए आवश्यक भूमि अर्जन की स्थिति की भी जानकारी ली गई। डीएम ने सभी अंचलाधिकारियों को लंबित एलपीसी (भूमि स्वामित्व प्रमाणपत्र) मामलों का शीघ्र निष्पादन कर आवश्यक प्रतिवेदन जिला भू-अर्जन कार्यालय को उपलब्ध कराने को कहा। जिला भू-अर्जन पदाधिकारी को निर्गत एलपीसी के भुगतान की प्रक्रिया में तेजी लाने और लंबित मामलों का शीघ्र निपटारा सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया।

खाता-खेसरा से जुड़े विवादित मामलों को आवश्यक अभिलेखों के साथ शीघ्र जिला भू-अर्जन कार्यालय भेजने को भी कहा गया, ताकि उनका समयबद्ध निराकरण किया जा सके। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि भू-अर्जन से जुड़ी प्रक्रिया लंबित रहने के कारण किसी भी महत्वपूर्ण विकास परियोजना के क्रियान्वयन में बाधा नहीं आनी चाहिए। उन्होंने संबंधित विभागों के बीच बेहतर समन्वय बनाकर कार्य में तेजी लाने पर जोर दिया। बैठक में अनुमंडल पदाधिकारी अनिकेत कुमार, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी अक्षयवट तिवारी सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at "Maruthi"Plaza"", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130 , RNI No. KNHIN/2026/A5540. E-Mail: news@bhaarataarth.com, Website: bhaarataarth.com, Established: 2026